# भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 9 | अक्टूबर 2008 | अंक 10

## गाँधी जयन्ती : 2 अक्टूबर

बात 1917 की है। कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर अल्फ्रेड थिएटर में एक कान्फ्रेंस आयोजित की गई थी। उसमें लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने मिश्री, असीरियाई आदि संस्कृतियों पर अंग्रेजी में भाषण दिया। भाषण बड़ा ही सारगर्भित था। भाषण के पश्चात् महात्मा गाँधी मंच पर आए और जनता से अत्यन्त विनम्रतापूर्वक पूछा—''आप में से जिन-लोगों ने लोकमान्य का अंग्रेजी भाषण अच्छी तरह समझा हो कृपया अपने हाथ ऊपर उठाएँ।'' उत्तर में एक चौथाई से भी कम हाथ उठे।

गाँधीजी ने फिर पूछा—''अगर यह भाषण हिन्दी में हुआ तो कितने लोग समझते?'' उत्तर में सभी के हाथ उठ गए। महात्माजी ने कहा—''बस इसीलिए मैं कहता हूँ कि सभी को हिन्दी सीखने की आवश्यकता है। मैं ऐसा कोई कारण नहीं समझता कि हम अपने देशवासियों के साथ अपनी भाषा में बात न करें। वास्तव में अपने लोगों के दिलों तक तो हम अपनी भाषा के द्वारा ही पहुँच सकते हैं।''

लोकमान्य तिलक महात्मा गाँधी के विचारों से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने जनता को वचन दिया—''मैं अब छह महीने में हिन्दी सीख लूँगा और तब हिन्दी में ही भाषण दिया करूँगा।'' अपनी प्रबल इच्छा-शक्ति के कारण लोकमान्य तिलक ने कुछ ही महीने में हिन्दी पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लिया और अपने भाषण हिन्दी में देने लगे। मराठी में प्रकाशित होने वाले अपने समाचार पत्र 'केसरी' में उन्होंने कुछ स्थान हिन्दी के लिए रख छोड़ा था।

''मेरी मातृभाषा में कितनी ही खामियाँ क्यों न हों, मैं इससे उसी तरह चिपटा रहूँगा, जिस तरह बच्चा अपनी माँ की छाती से। अगर अंग्रेजी उस जगह को हड़पना चाहती है, जिसकी वह हकदार नहीं है तो मैं उससे सख्त नफरत करूँगा। वह कुछ लोगों के सीखने की वस्तु हो सकती है, लाखों-करोड़ों की नहीं।'' — **महात्मा गाँधी**

## गूँजे हमारी भारती....

हर वर्ष सितम्बर का महीना कुछ खास 'दिवस' लेकर आता है। इनमें एक दिवस है 14 सितम्बर यानी 'राजभाषा हिन्दी-दिवस'। इस दिन हिन्दी के नाम पर खूब हो-हल्ला होता है। सरकारी तौर पर प्रशासनिक कार्यालयों, बैंकों आदि में राजभाषा के व्यावहारिक प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए 'पखवाड़ा', 'सप्ताह' या मात्र 'दिवस' का आयोजन किया जाता है। विद्यालयों, विश्वविद्यालयों के हिन्दी-विभागों में, हिन्दीसेवी साहित्यिक संस्थाओं में गोष्ठी, परिचर्चा, कवि-सम्मेलन आदि का आयोजन होता है, संकल्प दुहराये जाते हैं। इसके समानान्तर हिन्दी मीडिया की पत्र-पत्रिकाएँ, आकाशवाणी, दूरदर्शन आदि अपना दायित्व निभाते हैं। इस तरह इस 'दिवस' की रस्म-अदायगी पूरी कर ली जाती है।

हर साल की तरह इस सितम्बर में भी 'राजभाषा-दिवस' के आयोजन हुए, मगर इस बार तल्खी कुछ ज़्यादा थी जो कहीं व्यंग्य और कहीं आक्रोश बन कर उभरी। किसी ने इस 'दिवस' को पितृपक्ष का श्राद्ध करार दिया, किसी ने 'मैकाले' को कोसा, किसी ने बाज़ारवाद पर भँड़ास निकाली और सहज आशावादियों ने इसके वैश्वक-प्रसार को रेखांकित किया। किन्तु कहीं भी भाषागत मूल संकल्प, विनियोग और प्रयोग को लेकर गम्भीर-विमर्श नहीं किया गया।

वस्तुतः आज़ादी से पहले ब्रिटिश-साम्राज्य के विरोध में हमारा राष्ट्रीय परिदृश्य जितना एकात्म और लक्ष्यबद्ध था, वह आज़ादी पाने के साथ ही बहुलतावादी हो गया। आज़ादी से पहले हमारे राष्ट्रीय सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति का माध्यम बनी 'हिन्दी', जिसे उत्तर-दक्षिण के सभी नेताओं ने स्वीकार कर लिया था। इसी सहज स्वीकृति को दृष्टि में रखकर हमारे संविधान ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा और राजभाषा की प्रतिष्ठा दी। लेकिन पिछली ब्रिटिश प्रशासनिक-प्रक्रिया में ही विनिर्मित हमारे अपने संविधान की मूल-संरचना अंग्रेजी भाषा में ही की गयी जो राष्ट्रीय-प्रतिबद्धता के बावजूद तात्कालिक-आवश्यकता के रूप में स्वीकार्य थी। फिर भी चूक तो हो ही चुकी थी। परिणामतः कुछ प्रान्तों ने हिन्दी को राजभाषा बनाये जाने का विरोध किया, इसी विरोध के चलते पूरे देश में हिन्दी को लागू करने की समय-सीमा पहले तो पन्द्रह वर्ष तक बढ़ायी गयी फिर क्रमशः यह समय अनिश्चित काल बन गया। दूसरी गलती यह हुई कि देश के अधिकांश विश्वविद्यालयों में उच्च-शिक्षण की भाषा के तौर पर अंग्रेजी ज्यों की त्यों प्रतिष्ठित रही, जिनमें वैज्ञानिक और तकनीकी विषयों को लेकर एक दुराग्रह-सा बना रहा कि इन विशिष्ट विषयों को हिन्दी या दूसरी भारतीय-भाषाओं में नहीं पढ़ा-पढ़ाया जा सकता। इस तरह शिक्षण-प्रशिक्षण और प्रशासन में राष्ट्रीय मानक की जगह औपनिवेशिक-मानक ही प्रतिष्ठित रहे तो स्वाभाविक था कि अंग्रेजी को प्रतिष्ठा-भाषा का दर्ज़ा स्वयमेव प्राप्त हो जाये और यह हुआ भी।

जहाँ तक हमारी हिन्दी का प्रश्न है वह अपने सामाजिक-राजनयिक संघर्षों के बावजूद संघीय-भारत की जनता के बीच अपनी जगह बनाने में कामयाब रही है। 'निज भाषा उन्नति' के सूत्र को पकड़ कर हिन्दी-भाषा ने राष्ट्रीय-सांस्कृतिक गौरव का गान किया, स्वातंत्र्य के लिए बलिदान की प्रेरणा दी, आम-जनता के सुख-दुःख, संत्रास-वेदना और संघर्ष को मुखर

*शेष पृष्ठ 2 पर*

*पृष्ठ 1 का शेष*
किया। साथ ही देश-विदेश के महत्त्वपूर्ण साहित्य को आत्मसात् करने की प्रक्रिया में उनका अनुवाद प्रस्तुत किया, वैज्ञानिक और तकनीकी अध्ययन के लिए तत्सम्बन्धी शब्दावलियों के कोश तैयार किये, अपने विश्वकोश बनाये। जिनके अध्ययन से हमारी राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि को व्यापकता मिली। यद्यपि आज भी कुछ सीमाएँ हैं किन्तु आज बिना किसी पूर्वाग्रह-दुराग्रह के हिन्दी अपनी वैश्वक-अस्मिता की शक्ति लेकर संयुक्त-राष्ट्रसंघ पर दस्तक दे रही है। सतत-संघर्ष के बीच हिन्दी की प्रतिष्ठा के इस दौर में याद आ रहे हैं राष्ट्रकवि के शब्द—

**मानस-भवन में आर्यजन जिसकी उतारे आरती,**
**भगवान! भारतवर्ष में गूँजे हमारी भारती।**

# सर्वेक्षण

**त्रासदी ( 1 )**

बरसों बाद आषाढ़ के पहले दिन ही बादल बरसे और फिर बरसते रहे। इस बार अच्छी बारिश हुई। सूखती, फटती धरा सिंच गयी, रसमयी हो गयी मिट्टी। किसानों के चेहरे मुस्कुराये, खेतों में बीज पड़े, फलने-फूलने लगी धरती। इसी बीच दैवी-आपदा बनकर बाढ़ का कहर टूट पड़ा। पड़ोसी देश नेपाल की कोसी-नदी का बाँध दरका और हज़ारों-लाखों क्यूसेक पानी बह चला। समीपवर्ती प्रान्त बिहार के कई गाँवों और जनपदों में बर्बादी की दास्तान बन गयी कोसी की विनाशलीला। 20 लाख लोग बेघर हो गये, लाखों की जान बमुश्किल बची, हज़ारों ने जल-समाधि ले ली। इस खण्ड-प्रलय से बचाव-राहत का उपक्रम चल ही रहा था कि उड़ीसा में महानदी उमड़ पड़ी। सैकड़ों गाँवों, कुछ जिलों को अपनी चपेट में लेकर विकराल बन गयी महानदी। बिहार और उड़ीसा में सेना ने मोर्चा सँभाला, हज़ारों-लाखों की जानें बचीं तो कितने ही काल-कवलित हो गये। इसके समांतर महाराष्ट्र के नासिक-जिले के भांदरवाड़ा-बाँध में दरार पड़ गयी और कितने ही गाँव संकट में घिर गये। इधर उत्तर प्रदेश में शारदा-घाघरा और यमुना नदियों का जलस्तर खतरे के बिन्दु को लाँघकर खतरा बन गया है। इस तरह की राष्ट्रीय आपदाओं से निबटने में हम अक्षम नहीं हैं किन्तु हममें इच्छाशक्ति का अभाव है और हमारी सरकार और प्रशासन में भी समन्वय की कमी साफ दिखलायी पड़ती है। नतीजतन त्रासदी के बीच भी राजनीति की जाती है, नेताओं को चुनाव की आहट सुनायी पड़ती है, प्रशासनिक अमला अपनी रोटी सेंकता है। ये कर्णधार चैन की बंशी बजाते हैं और घर-बार खोकर शरणार्थी बनी जनता भाग्य और भगवान के सहारे अपने संत्रास को उबरने की कोशिश करती है। लगता है कि यह निज़ाम नकारा है, इसे बदलना ही होगा—''सिंहासन खाली करो कि जनता आती है.....!''

**त्रासदी ( 2 )**

आप रास्ते में चल रहे हैं, ट्रेन में सफर कर रहे हैं या बाज़ार में खरीदारी कर रहे हैं और आप नहीं जानते कि आप बमों की ज़द में हैं। अचानक धमाका होता है, बम फटते हैं और अकाल-मृत्यु के शिकार होते हैं हम-आप। 1992 के मुम्बई-विस्फोट के बाद पिछले कुछ वर्षों-महीनों में ये धमाके देश के विभिन्न राज्यों में हुए, केन्द्र-सरकार की नाक के नीचे हुए। कुछ धमाका-धर्मी पकड़े गये, पकड़े जा रहे हैं मगर अभी भी हम आतंक की जड़ खोजने से कतराते हैं। तथाकथित धर्म-निरपेक्षतावादी आतंकियों की पीठ सहलाते हैं, उनके मारे जाने पर उनके परिवार-जनों के लिए मुआवज़े का इन्तज़ाम करते हैं और दूसरी ओर ये दहशतगर्द इंटरनेट के माध्यम से संदेश भेजते हैं कि—''बचा सको तो बचा लो अपना भारत।'' कहना न होगा कि आतंक के साये में जीने को मजबूर हैं हम!

**कहाँ तो तय था चिरागाँ हरेक घर के लिये,**
**कहाँ चिराग़ मयस्सर नहीं शहर के लिये!**

**—परागकुमार मोदी**

## हिन्दी-डे के लाभ

हर साल का रस्मी उत्सव हिन्दी दिवस इस बार भी गुजर गया। एक पैदाइशी शंकालु हैं। वह फरमाते हैं कि भैया, संविधान में हिन्दी का राजभाषा प्रतिष्ठित होना कौन-सी ऐसी उपलब्धि है जो ढोल-ताशे बजें। हिन्दी के नाम पर दिवस मनाया जाए। फादर्स डे, मदर्स डे, टीचर्स डे भी तो आते रहते हैं हर वर्ष। इनके मनाए जाने से मदर, फादर, टीचर की इज्जत-वकत में कुछ इजाफा हुआ है क्या? बच्चे न माँ-बाप का फायदा उठाने में हिचकते हैं, न उन्हें उपेक्षा के कूड़ेदान में फेंकने से। 'मास-टर्र' तो मेंढक है समाज का। जैसा नाम, वैसा काम। बस व्यर्थ की टर्र-टर्र करता रहता है। उसे अपनी हैसियत का पता है समाज में। सरकार के चपरासी का सम्मान उससे कहीं ज्यादा है। इनाम-बख़्शीश पर उसका पैदाइशी हक है। मास्टर तो शैतान छात्रों का मजबूर खिलौना है। खिलौने की वह कभी नाक उमेठते हैं, कभी कान।

हमें ऐसे शंकालुओं से सावधान रहना है। यह कुछ न जानें, न बूझें, बस यों ही, लाल-बुझक्कड़ बनते हैं। ताजीराते हिन्द में फाँसी की सजा है, हत्या जैसे संगीन जुर्मों के लिए। यह कोर्ट के ऊपर है कि किसे फाँसी दे, किसे नहीं। इसी तरह संविधान में हिन्दी राजभाषा है। कब अंग्रेजी जाए, हिन्दी आए, यह सरकार पर निर्भर है। भाषा से फर्क पड़ता है क्या? निकम्मे को निकम्मा ही रहना है। हमें संतोष करना चाहिए। संतोषी सदा सुखी है। आज, नहीं तो कल, हिन्दी बनेगी राजभाषा। संविधान में प्रावधान होने से उम्मीद जगती है और उम्मीद पर दुनिया कायम है।

जैसे मदर, फादर डे के फायदे हैं, हिन्दी-डे के भी। पितृ-पक्ष में लोग पितरों को श्रद्धांजलि देते हैं, हिन्दी दिवस पर हम हिन्दी को। कुछ साहसी मंच से घोषणा करते हैं कि वह हिन्दी को विश्व-भाषा बना कर दम लेंगे। यह सुन कर श्रोता ताली पीटते हैं। कितना आला फलसफा है।

जीवन में और कुछ हो न हो, सपने तो बड़े हों। कौन जाने धुप्पल में कोई सच भी हो जाए। सठियाए पोपले प्रोफेसरों-लेखकों के ठाठ हैं, हिन्दी डे पर। वह घर पर बैठ कर मक्खी मारने के बजाय, फंक्शन दर फंक्शन अध्यक्षता करते हैं। माला-शाला किसे नहीं भाती है। चाय-नाश्ता, खातिर-तवज्जो, टैक्सी का भाड़ा, भाषण देने को मंच, प्रचार के लिए खबर, कभी-कभार फोटू भी और चाहिए ही क्या। अपनी तो एक ही हसरत है, हिन्दी दिवस देश में भी मने और विदेशों में भी। फ्री के खाने के साथ यूरोप-अमेरिका का सैर-सपाटा क्या बुरा है? हमें यकीन है, हिन्दी को राजभाषा और विश्व-भाषा बनाने का सिर्फ यही कारगर तरीका है।

**—गोपाल चतुर्वेदी**

# कौन ठगवा नगरिया लूटल हो

— भारत भारद्वाज

आजादी की लड़ाई के साथ हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा प्रदान करवाना भी एक प्रमुख मुद्दा था। 15 अगस्त 1947 को हमें आजादी तो मिल गई लेकिन 14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा ने हिन्दी को राजभाषा का दर्जा देते हुए इसे लागू करने की 15 वर्ष की अवधि तय की। बिल्कुल अनुसूचित जाति और जनजाति के आरक्षण की तरह। यानी हमारे नेताओं ने तय किया कि हिन्दी को 15 वर्षों बाद राजभाषा (राष्ट्रभाषा) का दर्जा दिया जाएगा। यह वैकल्पिक व्यवस्था थी। लेकिन मंशा हिन्दी की उपेक्षा ही थी और यह सिलसिला आज तक चल रहा है—अंग्रेजी को कायम रखना। यह हमारे राजनेताओं को जरूरी लगा, खासकर पण्डित जवाहरलाल नेहरू को, क्योंकि उनकी मानसिकता पश्चिम के रंग-ढंग से प्रभावित थी। यह नहीं भूलना चाहिए कि आजादी की लड़ाई हिन्दी के सहारे लड़ी गई थी, सिर्फ हिन्दी प्रदेशों में ही नहीं, अहिन्दीभाषी प्रदेशों में भी। तब महात्मा गाँधी ही नहीं, दक्षिण के लोकप्रिय राजनेता चक्रवर्ती सी राजगपेलाचारी भी हिन्दी की हिमायत करते थे। तब हमसे कहाँ चूक हुई, इस पर विचार करने की जरूरत है।

बेशक भारतेन्दु युग में हिन्दी नई चाल में ढली, लेकिन हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास एक हजार वर्ष पुराना है। इस इतिहास में राजस्थानी, मैथिली, ब्रजभाषा, अवधी और भोजपुरी की बोलियाँ भी शामिल हैं। तुलसीदास ने अवधी में 'रामचरितमानस' लिखा और जायसी की 'पद्‌मावत' भी इसी भाषा में हैं। विद्यापति के पद मैथिली में हैं, कबीर की 'साखी', 'रमैनी' और 'सबद' भोजपुरी में हैं। सूरदास के पद ब्रजभाषा और मीराबाई के पद-भजन राजस्थानी में।

हिन्दी कवि सुमित्रानन्दन पंत की षष्ठिपूर्ति पर अज्ञेय ने 'रूपांबरा' जैसे संकलन का सम्पादन किया था जिसमें अमीर खुसरो से लेकर कीर्ति चौधरी तक 101 प्रकृतिपरक कविताएँ शामिल थीं। क्या यह हैरानी की बात नहीं है कि हिन्दीभाषी प्रदेशों की ये तमाम बोलियाँ भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में और साहित्य अकादमी द्वारा स्वतंत्र भाषा इकाई के रूप में मान्यता के लिए संघर्षरत हैं। और तो और हिन्दी के प्राध्यापक और लेखक क्षेत्रीय बोलियों को सरकारी मान्यता दिलवाने के संघर्ष में शामिल हैं।

पिछले दिनों बंगलूरु में 'तृतीय हिन्दी भाषा कुम्भ' के समापन समारोह में नामवर सिंह ने कुछ ऐसा कहा जिसको लेकर 'समयांतर' पत्रिका में एक बड़ा विवाद उठ खड़ा हुआ। इस विवाद के घेरे में डॉ० गोपाल राय भी हैं, जिन्होंने भोजपुरी भाषी होने के बावजूद पटना विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष पद से अवकाश ग्रहण किया है। इसी पत्रिका में उनकी टिप्पणी 'हिन्दी हमारी भाषा नहीं है' छपी है। यद्यपि पत्रिका के नये अंक (सितम्बर) में उन्होंने सम्पादक द्वारा उक्त शीर्षक दिये जाने का प्रतिवाद किया है लेकिन टिप्पणी के हिसाब से सम्पादक द्वारा दिया गया शीर्षक ठीक लगता है। हिन्दी प्रदेशों की मातृभाषा और हिन्दी में ज्यादा फर्क नहीं है। असली बात बोलियों को मातृभाषा समझ लेने के कारण है। मेरी राय में अपनी संकीर्ण मानसिकता के कारण हिन्दी का सबसे ज्यादा अहित विश्वविद्यालयों के विभागाध्यक्षों और प्राध्यापकों ने ही किया है। हम भूल गये कि कभी राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का एक बड़ा सपना था—''भगवान, भारतवर्ष में गूँजे हमारी भारती।''

वस्तुतः आधुनिक हिन्दी की लड़ाई भारतेन्दु युग में ही शुरू हुई थी। इसी लड़ाई के परिणामस्वरूप हिन्दी को संवर्धित और विकसित करने के लिए लगभग एक दर्जन सरकारी और गैर सरकारी संस्थाएँ गठित की गईं। 'नागरी प्रचारिणी सभा' काशी की स्थापना 16 जुलाई 1893 को की गई। इसके संस्थापक थे बाबू श्यामसुन्दर दास, पं० रामनारायण मिश्र और ठाकुर शिवकुमार सिंह। इस संस्था ने आरम्भिक वर्षों में हिन्दी के विकास के लिए बड़ा काम किया। संस्था द्वारा 'हिन्दी शब्द सागर' (कोश) और हिन्दी व्याकरण (कामताप्रसाद गुरु) ही नहीं, हिन्दी भाषा का इतिहास (श्यामसुन्दर दास) और हिन्दी साहित्य का इतिहास (आचार्य रामचन्द्र शुक्ल) जैसे ग्रन्थ भी प्रकाशित किये गये। तुलसी, सूर, कबीर और जायसी की ग्रन्थावलियाँ प्रकाशित हुईं लेकिन आजादी के बाद यह संस्था मृतप्राय: सी हो गई। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि इसी संस्था के अनुमोदन से इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद से 'सरस्वती' पत्रिका निकलती थी लेकिन जब 'सरस्वती' के सम्पादक आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने उक्त संस्था के कार्यकलाप पर कठोर टिप्पणी की तो अनुमोदन समाप्त हो गया। आज यह संस्था प्राय: निष्क्रिय है।

'प्रयाग हिन्दी सम्मेलन' की स्थापना सन् 1910 में हुई थी। आजादी मिलने के पूर्व तक यह संस्था हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सक्रिय थी। सम्मेलन का पहला अधिवेशन काशी नागरी प्रचारिणी सभा के नियमानुसार 1910 में काशी में हुआ था जिसकी अध्यक्षता महामना पं० मदनमोहन मालवीय ने की थी। इसी सम्मेलन में मिश्र बन्धु ने हिन्दी साहित्य के इतिहास की रूपरेखा प्रस्तुत की थी। सम्मेलन का दूसरा अधिवेशन 1911 में इलाहाबाद में हुआ था जिसमें आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने अपनी कविता 'संदेश' पढ़ी, जिसकी आरम्भिक पंक्तियाँ है—

सुनिए सब सज्जन विद्वतजन
प्रिय हिन्दी भाषाभाषी
पूज्य पवित्र मातृभाषा की
उन्नति के अति अभिलाषी
प्रबल प्रेरणा से हिन्दी की
जहाँ आज मैं आया हूँ
उसका ही सन्देश आपको
स्वल्प सुनाने आया हूँ।

ये थे हिन्दी के हिमायती असली कर्णधार।

बिहार राष्ट्रभाषा, पटना की स्थापना 11 अप्रैल, 1947 को हुई। इसने आरम्भिक वर्षों में अद्‌भुत काम किया, जब आचार्य शिवपूजन सहाय इसके निदेशक थे। हिन्दी प्रचार-प्रसार के लिए बने अन्य संस्थान हैं—केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय-दिल्ली, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा (महाराष्ट्र), उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, साहित्य अकादमी और हिन्दी साहित्य अकादमी, दिल्ली। इन संस्थाओं ने पिछले चालीस वर्षों में पुरस्कार बाँटने के अलावा कुछ नहीं किया।

विश्व हिन्दी सम्मेलन के नाम पर अब तक जो कुछ हुआ है, यह हम सबको मालूम है लेकिन हमें यह बात ठीक से मालूम नहीं कि हिन्दी आज भी गरीब है। इसके पास न अत्याधुनिक शब्दकोश है न हिन्दी का व्याकरण न विश्वकोश। वाराणसी ज्ञानमण्डल ने भी सातवें दशक के आरम्भ में दो खण्डों में 'हिन्दी साहित्यकोश' का प्रकाशन किया था जिसे हम आज तक संशोधित नहीं कर सके हैं। हमसे तो यह भी न हो सका कि फादर कामिल बुल्के के शब्दकोश—'अंग्रेजी-हिन्दी कोश' को आज के समय से जोड़ सकें। हिन्दी प्रचार-प्रसार के निमित्त महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के क्रिया-कलाप भी निराशाजनक हैं। समझ नहीं आता कि किस बल-बूते पर हम राष्ट्रसंघ में हिन्दी को मान्यता दिलाने की लड़ाई लड़ रहे हैं। विभिन्न विश्वविद्यालयों के प्रकाशित शोध-प्रबन्धों की अलग करुण गाथा है। यदि कबीर की नगरिया को हम नागरी मान लें तो दु:ख के साथ कहना पड़ेगा कि हिन्दी का चीर-हरण हिन्दी के ही प्राध्यापकों ने किया है। स्वतंत्रता पूर्व हिन्दी को समृद्ध करने के लिए जितना कुछ हुआ, उसके बाद नहीं।

हिन्दी के लोकप्रिय व्यंग्य लेखक हरिशंकर परसाई ने हिन्दी पर दो टिप्पणियाँ की हैं—'मातृभाषा और रतौद्र' और 'हिन्दी विरोधी शक्तियाँ'। पहली टिप्पणी में उन्होंने लिखा—

'जुलाई की 'कल्पना' में 67 लेखकों के नाम से 'भाषा वक्तव्य' छपा है और आठ लेखकों के नाम से एक 'कार्यक्रम'।... मेरा सुझाव है कि हिन्दी के लेखकों से पूछ लिया जाए कि उनमें कौन बच्चों के 'पिताजी' या 'बाबूजी' हैं और कौन 'डैडी' या 'पापा...।' उसी सूची में उन लेखिकाओं के नाम भी लिखे जाएँ, जो 'मम्मी' हैं। विवाहिताओं में जो 'प्रिये' नहीं, 'डार्लिंग' हैं, वे भी उसी सूची में रखी जाएँ। अविवाहित लेखिकाओं के भविष्य के ख्याल से अभी उन्हें सभी सूचियों से मुक्त रखा जाये।

उनकी दूसरी टिप्पणी का शीर्षक है—'हिन्दी विरोधी शक्तियाँ' जो 'वसुधा' के नवम्बर 1956 के अंक में सम्पादकीय रूप में छपा था। वे लिखते हैं—'...पर हिन्दी के प्रति एक प्रकार का पूर्वाग्रह कुछ लोगों के मन में है जिनमें पं० नेहरू जैसे लोग भी हैं। पण्डितजी में हर विषय पर अन्तिम शब्द बोल देने की जो प्रवृत्ति है, उसी के अनुसार उन्होंने कुछ दिन पहले कह दिया कि यदि हिन्दी से काम चलाया गया तो पंचवर्षीय योजना के क्रियान्वयन में कठिनाई होगी। देख लिया न आपने। रूस, जापान, चीन अपनी भाषाओं के माध्यम से बिना अंग्रेजी पर आश्रित हुए प्रगति कर सकते हैं तो भारत क्यों नहीं?'....हमारे यहाँ भाषा और साहित्य के मामले भी मंत्रियों के द्वारा तय होते हैं। भाषा या लिपि के निर्णय विशेषज्ञ नहीं लेते, मंत्रिगण बैठकर तय कर लेते हैं। क्या यह हिन्दी के साथ अन्याय नहीं है?

बहरहाल, 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाया जाना मुझे पाखण्डपूर्ण लगता है। खासकर इसलिए भी कि यह हिन्दीभाषियों का श्राद्धपक्ष होता है। हिन्दी को हिन्दीवालों ने ही मारा है। हाल में हिन्दी के एक सुप्रसिद्ध आलोचक से चर्चा हो रही थी। हिन्दी के बारे में पूछे गये प्रश्न के उत्तर में छूटते ही उन्होंने कहा—'आज दूर से दिल्ली में हिन्दी की जैसी तस्वीर दिखलाई पड़ती है, वह असली तस्वीर नहीं है। हिन्दी की असली तस्वीर आज दूर-दराज के शहरों और कस्बों में निरन्तर उन लेखकों में दिखलाई पड़ती है जो भारतेन्दु, बालकृष्ण भट्ट, बालमुकुन्द गुप्त, आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी, प्रेमचंद, निराला, आचार्य शुक्ल, रेणु और मुक्तिबोध को ढूँढ रहे हैं।'

अन्त में यही कहना है कि 50 करोड़ से ऊपर के लोगों की भाषा को न भूमण्डलीकरण दबा सकता है और न पूँजीवादी बाजारवाद। बल्कि उल्टा यह हुआ है कि हिन्दी से असली खतरा अब अंग्रेजी को है। अंग्रेजी भाषा का रूप इण्टरनेट पर और एसएमएस पर भी जिस तरह बिगड़ रहा है, वह चिन्ताजनक है। हिन्दी भाषा शक्तिशाली ही नहीं, लिपि के स्तर पर वैज्ञानिक भी है, भले ही चारमंजिली है। लेकिन हम जो लिखते हैं, वही बोलते हैं। आज या कल मजबूर होकर राष्ट्रसंघ हिन्दी को मान्यता देगा।

# बदलाव के दौर में हिन्दी

— राजेन्द्र राव

साठ बरस पहले दीर्घ और सशक्त जन-प्रतिरोध के चलते भारत में अंग्रेजी साम्राज्य के दिन लद गए। अंग्रेज भले ही बोरिया बिस्तर बाँध कर चले गए, मगर अंग्रेजी जमी रही और उसका रुतबा बरकरार रहा। अंग्रेजों का साम्राज्य समाप्त होने के साथ अंग्रेजी का वर्चस्व भी क्षीण होना चाहिए था, लेकिन ऐसा नहीं हुआ तो उसके मूल में नव सत्तासीन राष्ट्रीय नेताओं के मन में भाषाई सौहार्द बिगड़ने की आशंका थी। इस निर्मूल आशंका का तर्कसंगत और वस्तुपरक निराकरण उसी समय करने के बजाय 'एकता बनाए रखने' के नाम पर अंग्रेजी को बनाए रखने की युक्ति लगभग वैसी ही थी जैसे सत्ता हस्तान्तरण के बावजूद तत्कालीन वाइसराय लार्ड माउंटबेटन से कुछ समय तक गवर्नर जनरल के रूप में पद पर बने रहने को कहा गया था। सच्चाई यह है कि अंग्रेजी को राजकाज से विदा करने लायक आत्मविश्वास हम अभी तक अर्जित नहीं कर पाए हैं। इसका कारण अंग्रेजी से अंधा प्रेम या लगाव नहीं, न ही उसकी सर्वस्वीकार्यता है, बल्कि स्वतंत्रता प्राप्ति के तत्काल बाद देश के विभिन्न क्षेत्रों से उठे भाषाई आंदोलनों की विभाजनवादी मानसिकता है, जिसके तहत भाषाई आधार पर प्रदेशों का पुनर्गठन करना पड़ा। एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में यह अनिवार्य था, परन्तु इससे भाषाई-आधार पर वोट बैंक बनाने और सहेजने की प्रवृत्ति ने जोर पकड़ा। आज मुंबई में दुकानों और अन्य प्रतिष्ठानों पर मराठी भाषा में नामपट लगाने के लिए जिस तरह का धमकी भरा आग्रह किया जा रहा है उससे भाषाई वोट बैंक की अवधारणा को समझा जा सकता है।

स्वतन्त्रता संग्राम के महानायक गाँधीजी ने भारत जैसे विशाल, विस्तृत और बहुभाषी देश में एक सर्वमान्य और सर्वसुलभ सम्पर्क भाषा की कसौटी पर हिन्दी को उपयुक्त पाया था और नई भूमिका के लिए उसे तैयार करने का आग्रह किया था। गाँधीजी और सुभाष बाबू इस बात पर एक राय थे कि राष्ट्रीय भाषा का नाम हिन्दुस्तानी होना चाहिए और उसमें यथासम्भव अन्य भाषाओं के बहुप्रचलित शब्दों का समावेश होता रहे ताकि वह देश के कोने-कोने में सरलता से बोली और समझी जा सके। नेताजी ने आजाद हिन्द फौज में प्रशासनिक और व्यवहारिक भाषा के रूप में जो प्रयोग किए उनसे हमें सबक लेना चाहिए था, परन्तु हिन्दी प्रेम के अति उत्साह और अंग्रेजी की जबर्दस्त पैरोकारी के द्वंद्व के चलते जाने-अनजाने कई तकनीकी किस्म की भूलें हुईं जिनका खामियाजा हिन्दी को बेवजह उठाना पड़ा। सबसे ज्यादा नुकसान हिन्दी को राष्ट्रभाषा या सम्पर्क भाषा के बजाय 'राजभाषा' जैसे सजावटी विशेषण से विभूषित करने से हुआ। हिन्दी कैसी राजभाषा बनी है, यह तो जगजाहिर है, लेकिन सरकारी कामकाज की भाषा के रूप में अंग्रेजी आराम से सिंहासन पर आरूढ़ है। दूसरी भूल शब्दावली आयोग द्वारा गढ़े गए भारी भरकम और बेजान शब्दों के अवतरण के रूप में हुई। 'लौहपथ गामिनी विराम स्थल' जैसे हास्यास्पद शब्द इसके उदाहरण हैं। तीसरी भूल दक्षिण भाषा हिन्दी प्रचार सभा जैसे महत्त्वपूर्ण और प्रभारी अभियानों की स्वतन्त्रता के बाद के समय में उपेक्षा रही। दरअसल समस्या यह है कि हम अपनी मातृभाषा से इतर भाषा का प्रयोग तो करते हैं, लेकिन उसे अपनापन देने के लिए मानसिक रूप से तैयार नहीं।

जो भी हो, वैश्वीकरण और खुले बाजार के इस दौर में हिन्दी बाजार की भाषा के रूप में बिना किसी वैधानिक बैसाखी या भावनात्मक ज्वार के एक बड़ी भाषा के रूप में उभरी है। एक वृहत्तर सम्पर्क भाषा की अपनी असली भूमिका में जिस तरह यह विज्ञापन जगत और संचार माध्यमों पर सोने का अण्डा देने वाली मुर्गी के रूप में छाई है उससे अंग्रेजी को कड़ी चुनौती मिली है। राजभाषा के रूप में इसकी प्रभावहीनता अब गौण होती जा रही है। ठीक है आज की तारीख में रोजगार सम्बन्धी अवसरों के सिलसिले में अंग्रेजी लगभग अपरिहार्य है, मगर जिस तरह से कारोबार की दुनिया में हिन्दी का वर्चस्व बढ़ रहा है उसे देखते हुए वह दिन दूर नहीं जब यह रोजगार दिलाऊ बन जाएगी। हिन्दी की इस बढ़त का प्रभाव अन्य भारतीय भाषाओं और स्वयं हिन्दी की उपभाषाओं पर पड़ा है। भोजपुरी का ही उदाहरण लें। अभी तक लगभग उपेक्षित रही यह भाषा अपनी कारोबारी क्षमता के कारण फिल्म उद्योग से मजबूती से अपने पैर जमा रही है। और इसी के साथ हिन्दी में आ रहा है बदलाव। मीडिया पर प्रभुत्व जमाने के लिए हिन्दी को अपनी कथित जटिलता को तिलांजलि देनी पड़ी है। बहुत से लोगों को हिन्दी का यह अत्यन्त लचीला और सर्वसमावेशी रूप नहीं भा रहा है, परन्तु परिवर्तन तो सृष्टि का नियम है। हर चीज बदलती जा रही है तो हिन्दी ही कब तक पर्दानशीं रहेगी। हिन्दी ही नहीं, सभी प्रमुख भारतीय भाषाएँ कारोबारी और रोजगारी दबाव में बदलाव की इस प्रक्रिया से गुजरेंगी।

हिन्दी भाषा की सहायता से भारत के विभिन्न प्रदेशों में जो ऐक्य बंधन स्थापित कर सकेगा, वही भारतबंधु कहलाने योग्य है। — **बंकिम चन्द्र**

# हिन्दी भाषा कॅरियर के नये आयाम

— डॉ० देवव्रत सिंह

पिछले एक दशक में भूमंडलीकरण के कारण जिन चंद क्षेत्रों में थोड़ा सुखद बदलाव आया है, उनमें से एक हिन्दी का रुतबा बढ़ना भी है। इस दौरान बाजार ने हिन्दी को अपनाया है और उसका बाजार भाव भी पहले से बढ़ा है। हिन्दी के बलबूते मिलने वाली नौकरियों की संख्या पहले की तुलना में आज कई गुना अधिक हुई हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि हिन्दी के साथ जुड़ा पिछड़ापन अब नदारद है और अच्छी हिन्दी जानने वालों में एक गर्व का भाव भी आसानी से देखा जा सकता है। निस्संदेह हिन्दी भाषियों के लिए ये बदलाव काफी सकारात्मक कहे जाएँगे, क्योंकि लम्बे समय तक हिन्दी पट्टी पर भाषा को लेकर जो आत्महीनता का भाव मौजूद रहा है वो अब धीरे-धीरे नए किस्म के गौरवभाव में बदल रहा है।

**क्या आपके पास ये सब है?**

- त्रुटिरहित, सरल, सहज हिन्दी
- एक से अधिक भाषा
- शब्दों का खजाना
- शब्दों के अर्थों की गहरी समझ
- देश-दुनिया की जानकारी
- कम्प्यूटर कौशल और हिन्दी में टाइपिंग

### अपनी भाषा, अपनी बात

हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में फिल्मों और टेलीविजन कार्यक्रमों का काफी योगदान रहा है। जो काम केन्द्रीय सरकार कानून बनाकर नहीं कर पाई वो काम बहुत ही सहज तरीके से मीडिया कर रही है। यह काम है हिन्दी को एक राष्ट्रीय भाषा के रूप में बनाकर उभारना। आज देश के दक्षिणी प्रान्त हों या पूर्वोत्तर, सब जगह न केवल हिन्दी समझी जाती है, बल्कि हिन्दी कार्यक्रम चाव से देखे भी जाते हैं। अब हिन्दी का स्वरूप भी बदल रहा है। मीडिया क्षेत्र में हिन्दी में निरन्तर नए प्रयोग हो रहे हैं। भारत में सबसे अधिक हिन्दी भाषी होने के कारण बाजार ने भी हिन्दी के महत्त्व को स्वीकार कर लिया है। पहली बार बाजार हिन्दीमय हो रहा है या कहें हिन्दी का फैशन चल पड़ा है। विज्ञापन हो या ग्रीटिंग कार्ड, सभी कुछ हिन्दी में पहले से अधिक सहज लग रहा है।

### अच्छी हिन्दी जानने वालों की कमी

मातृभाषा होने के कारण हिन्दी के साथ हम लोगों का रवैया थोड़ा अलग किस्म का होता है। यही कारण है कि अंग्रेजी सीखने के लिए अनेक बार ट्यूशन लेते हैं लेकिन हिन्दी के बारे में अक्सर सोचते हैं कि हिन्दी तो हमें आती ही है, इसे सीखने की क्या आवश्यकता है? दरअसल, हिन्दी को लेकर यह ढीला-ढाला रवैया ही हमारे विकास में सबसे बड़ा रोड़ा है। इसका नतीजा यह होता है कि मातृभाषा होने के बावजूद अच्छी हिन्दी जानने वालों का टोटा बना रहता है। अच्छी हिन्दी जानने का मतलब यह नहीं लगाया जाना चाहिए कि संस्कृतनिष्ठ क्लिष्ट शब्दावली के उपयोग से हिन्दी सुन्दर बन जाती है। आजकल युवा पीढ़ी में बड़े पैमाने पर हिन्दी और अंग्रेजी को मिलाकर बोलने का फैशन चल पड़ा है। अगर उन्हें पाँच मिनट केवल हिन्दी बोलने के लिए कहा जाए तो उनके लिए समस्या खड़ी हो जाएगी। पर, इस घालमेल के चक्कर में उन्हें न तो हिन्दी और न ही अंग्रेजी अच्छे तरीके से आ पाती है। यह स्थिति भी अच्छी नहीं कही जा सकती। दरअसल, यह हालत भाषा को लेकर नई पीढ़ी के अगम्भीर रवैये का नतीजा है। जिससे हर गलती को छुपाने के लिए 'सब चलता है' की प्रवृत्ति फैशन बन गयी है। इससे भाषा के प्रति रुचि पैदा करने में हमारे शिक्षण संस्थानों की विफलता भी जाहिर होती है।

### कॅरियर की डगर पर हिन्दी

एक जमाना था जब हिन्दी सीखने वाले छात्र-छात्राएँ केवल हिन्दी शिक्षक बनने का सपना लेकर चलते थे। लेकिन अब स्थिति बदल चुकी है। हिन्दी समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, टेलीविजन चैनलों के जबरदस्त विस्तार के बाद अच्छी हिन्दी जानने वालों की माँग काफी बढ़ गई है। लम्बे समय तक ऐसे छात्रों को मीडिया में हाथों-हाथ लिया जाता रहा, जिनके पास हिन्दी में एम०ए० के अलावा पत्रकारिता में डिप्लोमा डिग्री है। लगभग सभी मीडिया पाठ्यक्रमों में हिन्दी को एक महत्त्वपूर्ण हिस्से के रूप में पढ़ाया जाता है। ऐसे में जिन छात्रों की हिन्दी स्नातक स्तर पर ही अच्छी है, उन्हें मीडिया में काम मिलने की सम्भावना अधिक रहती है।

भूमण्डलीकरण के बाद विज्ञापन और जनसम्पर्क के क्षेत्र में भी काफी फैलाव हुआ है। सभी बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ भारत में अपना विज्ञापन एवं प्रचार अभियान हिन्दी में कर रही हैं। इसके पीछे सीधा सा कारण है कि जो भाषा उपभोक्ता बोलता और जानता है उससे उसी की भाषा में बात की जाए। ये बदलाव अनेक हिन्दी प्रचार अभियानों की सफलता के बाद आए हैं। इसलिए जरूरत ऐसे हिन्दी स्क्रिप्ट राइटर और अनुवादकों की होती है, जो हिन्दी ही नहीं बल्कि अंग्रेजी के भी अच्छे जानकार हों। नारों, विज्ञापनों और विज्ञप्तियों के अनुवाद के लिए सामान्य से कई गुना अधिक पैसा दिया जाता है।

राष्ट्रीय ज्ञान आयोग ने पिछले दिनों सुझाव दिया है कि देश में एक राष्ट्रीय अनुवाद मिशन का गठन किया जाए। इसका मूल उद्देश्य होगा कि दुनियाभर से महत्त्वपूर्ण पुस्तकों का भारतीय भाषाओं में बड़े पैमाने पर अनुवाद किया जाए, ताकि भारतीयों को उनकी भाषा में ही दुनियाभर का नूतन ज्ञान उपलब्ध हो सके। अच्छे अनुवादक से अपेक्षा की जाती है कि वह एक से अधिक भाषाओं की समझ रखता हो। सभी सरकारी विभागों और बैंकों में हिन्दी अधिकारी का पद होता है। जिसका काम यह सुनिश्चित करना होता है कि संस्थान में सहज रूप से अधिकाधिक हिन्दी में काम हो और भाषा को लेकर कर्मचारियों को किसी प्रकार की कठिनाई ना आए। हिन्दी अधिकारी के लिए हिन्दी विषय में स्नातकोत्तर डिग्री और अनुभव माँगा जाता है। मीडिया में कार्यानुभव का भी लाभ मिलता है। आधुनिक युग में किसी भी भाषा में काम करने वाले के लिए नई तकनीक में पारंगत होना भी आवश्यक है। आज सभी जगह हिन्दी में काम कम्प्यूटर की मदद से हो रहा है। ऐसे में कम्प्यूटर की समझ के साथ-साथ हिन्दी की अच्छी टाइपिंग की जानकारी भी जरूरी है। बेहद जरूरी है कि आप बाजार की माँग के अनुरूप स्वयं को तैयार करके हिन्दी को अपना सशक्त औजार बनाएँ।

---

### दर्द का स्वर

वर्ष का कोई एक दिन बस एक ही होता है
आने और फिर जाने का दिन भी एक ही होता है
मनाने और मान जाने का मन तो एक ही होता है
हम क्यों कहें उनसे अपने मन की बात?
तड़पने और तड़पाने का दिल तो एक ही होता है
आप अपने दिल को परख कर तो देखें—
दर्द का स्वर तो सबके मन में एक ही होता है

**— विश्वनाथ पाण्डेय**


**अध्येताओं, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं**

के लिए

**साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह**

**तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम**

**विश्वविद्यालय प्रकाशन**

विशालाक्षी भवन, चौक
(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)
**वाराणसी** – 221 001 (उ०प्र०)
Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com
Website : www.vvpbooks.com

# सम्मान-पुरस्कार

### सम्मान एवं पुरस्कार अर्पण समारोह आयोजित

हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित वर्ष 2007-08 के लिए साहित्यकार सम्मान एवं पुरस्कार वितरण समारोह में हिन्दी एवं हरियाणवी भाषाओं की उत्कृष्ट पुस्तकों के लिए मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा द्वारा पुरस्कार वितरित किए। इस अवसर पर शिक्षा मंत्री श्री मांगेराम गुप्ता, डॉ० नामवर सिंह, उच्चतर शिक्षा आयुक्त श्रीमती ज्योति अरोड़ा, डॉ० गुरमीत सिंह आदि उपस्थित थे। इनमें **डॉ० संसार चन्द्र** को सर्वाधिक दो लाख रुपये, एक शॉल एवं स्मृति चिह्न का 'हरियाणा साहित्य रत्न सम्मान', **डॉ० मनमोहन** को 'महाकवि सूरदास सम्मान', **श्री ताराचंद पांचाल** को 'हिन्दी साहित्य' तथा **श्री राजकिशन नैन अजायब** को हिन्दी पत्रकारिता के लिए 'बाबू बालमुकुंद गुप्त सम्मान', **श्री केवल हरियाणवी** व श्री **श्याम सखा श्याम** को 'पण्डित लखमी चंद सम्मान' तथा **श्री अक्षय मौर्य** को 'हरियाणा गौरव सम्मान' से सम्मानित किया। नौ हिन्दी लेखकों को वर्ष 2007-08 के लिए उनकी पुस्तकों के लिए पुरस्कार प्रदान किए गए। इनमें फरीदाबाद के **श्री हरे राम समीप**, अम्बाला के **श्री अशोक शर्मा**, फरीदाबाद के **श्री कमल कपूर**, कैथल के **श्री अमृतलाल मदान**, गुड़गाँव के **श्री घमंडीलाल अग्रवाल**, करनाल के **श्री मदन कपूर**, हिसार के **श्री ओ०पी० कादियान**, रोहतक के **श्री राजबीर सिंह** को सम्मानित किया।

### गोइनका पुरस्कार अर्पण समारोह आयोजित

वरिष्ठ पत्रकार एवं 'नवनीत' के सम्पादक श्री विश्वनाथ सचदेव की अध्यक्षता में आयोजित गोइनका पुरस्कार 2008 में **डॉ० प्रेम जनमेजय** को पुरस्कारस्वरूप एक लाख रुपये नकद एवं **श्रीमती सूर्यबाला** को इकतीस हजार रुपये नकद के साथ शॉल, स्मृति-चिह्न, श्रीफल तथा पुष्पगुच्छ प्रदान किया किया गया। समारोह में साहित्यकार श्री वेद राही मुख्य अतिथि तथा प्रसिद्ध मीडियाकर्मी श्री मुकुल उपाध्याय विशिष्ट अतिथि के अतिरिक्त वरिष्ठ पत्रकार श्री नंदकिशोर नौटियाल, डॉ० करुणाशरण उपाध्याय, नवभारत के फीचर सम्पादक श्री शत्रुघ्न प्रसाद सहित राज्य के अनेक प्रख्यात साहित्यकार, मीडियाकर्मी एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। इस अवसर पर वरिष्ठ रचनाकार **डॉ० नरेन्द्र कोहली** को व्यंग्य विधा में विशिष्ट योगदान के लिए 'गोइनका व्यंग्य साहित्य सारस्वत सम्मान' से सम्मानित किया गया। डॉ० नरेन्द्र कोहली ने डॉ० गिरिजाशंकर त्रिवेदी द्वारा सम्पादित त्रैमासिक पत्रिका 'हास्यं व्यंग्यम्' का लोकार्पण भी किया।

### मध्यप्रदेश सरकार सम्मान

मध्यप्रदेश सरकार ने सन् 2007-08 का गाँधी विचार एवं दर्शन के अनुरूप कार्यों के लिए अपना प्रतिष्ठापूर्ण राष्ट्रीय महात्मा गाँधी सम्मान आरएसएस के सहयोगी संगठन सेवा भारती को देने की घोषणा की है। इसके अन्तर्गत दस लाख रुपये दिये जाएँगे।

भारतीय कविता के क्षेत्र में स्थापित 'राष्ट्रीय कबीर सम्मान' डोगरी भाषा की सुप्रतिष्ठित कवयित्री **पद्मा सचदेव** को तथा हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में स्थापित 'राष्ट्रीय मैथिलीशरण गुप्त सम्मान' विख्यात लेखक **डॉ० शत्रुघ्न प्रसाद** को दिया जाएगा।

रूपंकर कलाओं के क्षेत्र में स्थापित 'राष्ट्रीय कालिदास सम्मान' प्रख्यात चित्रकार, शिल्पकार **सतीश गुजराल** को शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में स्थापित 'राष्ट्रीय कालिदास सम्मान' प्रख्यात संगीतज्ञ एवं संगीतविद् **पण्डित बलवंत राय भट्ट** (भावरंग) को और शास्त्रीय नृत्य के क्षेत्र में स्थापित 'राष्ट्रीय कालिदास सम्मान' भरतनाट्यम नर्तक एवं अध्येता **प्रो० सी०वी० चन्द्रशेखर** को दिया जाएगा।

### डॉ० भवानीलाल भारतीय को आर्य विभूषण सम्मान

प्रख्यात वैदिक विद्वान तथा दयानन्द शोध पीठ चण्डीगढ़ के भूतपूर्व अध्यक्ष **डॉ० भवानीलाल भारतीय** को इस वर्ष का आर्य विभूषण सम्मान (राजा हरिश्चन्द्र ट्रस्ट द्वारा प्रायोजित) उनके विशद लेखन तथा शोध के लिए दिया जा रहा है। पचास वर्षों की दीर्घ अवधि में डॉ० भारतीय के लगभग 150 ग्रन्थ छपे हैं जो वेद, दर्शन, साहित्य तथा भारतीय पुनर्जागरण से सम्बन्धित हैं। उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द तथा लाला लाजपतराय के समग्र लेखन का सम्पादन 20 खण्डों में किया है। अकेले स्वामी दयानन्द पर उनके साठ ग्रन्थ छप चुके हैं। सम्मान के रूप में उन्हें 21 हजार रुपये की राशि तथा अभिनन्दन पत्र, स्मृति चिह्न एवं उत्तरीय आदि प्रदान किये जायेंगे। यह समारोह 5 अक्टूबर को ग्राम बीगोपुर (जिला महेन्द्रगढ़) में योगऋषि स्वामी रामदेवजी की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा।

### अखिल भारतीय बाल-साहित्य सम्मेलन द्वारा पुरस्कारों की घोषणा

विगत दिनों अखिल भारतीय बाल-साहित्य सम्मेलन द्वारा पुरस्कारों की घोषणा की गई। 'पं० सोहनलाल द्विवेदी बाल-साहित्य पुरस्कार-वर्ष 2007' **डॉ० दर्शन सिंह ऑशट** की पुस्तक 'बिंटी की सूझ' एवं **श्री बिलास बिहारी** की पुस्तक 'आठ हजार वर्ष का बालक' के लिए संयुक्त रूप से एवं वर्ष 2008 के लिए **श्री गोविंद शर्मा** (सांगरिया) की पुस्तक 'मेहनत का मंत्र' के लिए प्रदान किया जाएगा। पुरस्कार राशि ग्यारह हजार रुपए है। 'चंद्रसिंह राजस्थानी बाल साहित्य पुरस्कार' **श्री अब्दुल समद राही** (सोजत) को उनकी पुस्तक 'म्हाँ टाबरिया भारत माँ रा' एवं **श्री रामजीलाल घोडेला** को उनकी पुस्तक 'जादू रो चिराग' के लिए प्रदान किया जाएगा। पुरस्कार राशि प्रत्येक को दो हजार पाँच सौ रुपए है। 'वरिष्ठ बाल साहित्यकार सम्मान' **रामनिरंजन शर्मा 'ठिमाऊ', हुंदराज बलवाणी, राष्ट्रबंधु** को एवं 'युवा बाल साहित्यकार सम्मान' सर्वश्री **नयनकुमार राठी, दीनदयाल शर्मा** एवं **नागेश पाण्डेय 'संजय'** को दिया जाएगा। सम्मान राशि प्रत्येक को दो हजार पाँच सौ रुपए है। सम्मान-अर्पण समारोह 28 दिसम्बर को उदयपुर में आयोजित किया जाएगा।

### विष्णु प्रभाकर को 'शब्द साधक शिखर सम्मान'

23 अगस्त को हिन्दी भवन, नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में वयोवृद्ध चिंतक व लेखक **श्री विष्णु प्रभाकर** को 'शब्द साधक शिखर' सम्मान से सम्मानित किया गया। श्री प्रभाकर को यह पुरस्कार जगदीश चन्द्र जोशी स्मृति साहित्य पुरस्कारों की शृंखला के अन्तर्गत दिया गया। पुरस्कार-स्वरूप 51 हजार रुपए की राशि तथा श्रीफल आदि भेंट किए गए।

### राष्ट्रीय शरद जोशी सम्मान आलोक मेहता को

मध्यप्रदेश सरकार का प्रतिष्ठित 'राष्ट्रीय शरद जोशी सम्मान' वर्ष 2007-08 के लिए वरिष्ठ पत्रकार **आलोक मेहता** को प्रदान किया जायेगा। यह सम्मान संस्मरण, ललित निबन्ध, रिपोर्ताज आदि विधाओं में महत्त्वपूर्ण कार्य करने के लिए प्रदान किया जाता है।

सम्मान के रूप में आलोक मेहता को भोपाल में शीघ्र ही आयोजित एक समारोह में 1 लाख रुपये नकद, श्रीफल, शॉल, शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जायेगा।

श्री मेहता वर्तमान में एडिटर्स गिल्ड ऑफ इंडिया के अध्यक्ष तथा 'नई दुनिया' समाचार पत्र समूह के प्रधान सम्पादक हैं।

### डॉ० प्रभा इंग्लैण्ड में सम्मानित

अखिल भारतीय कवयित्री सम्मेलन की संरक्षिका **डॉ० प्रभा कुमारी** को बर्मिंघम के देवी मन्दिर हॉल में काँस्य पदक, चुनरी चादर एवं स्मृति चिह्न से सम्मानित किया गया। उनके नये काव्य-संग्रह 'मिट्टी के पृष्ठ' का लोकार्पण सम्पन्न हुआ। भारतीय दूतावास, लंदन में उनके अनवरत साहित्यिक, सामाजिक एवं भाषाई समन्वय में योगदान के लिए 'भाषाई समन्वय सम्मान' से सम्मानित किया गया। डॉ० प्रभा ने बर्मिंघम और दूतावास में कविता पाठ भी किया।

## ब्रिटिश संसद में एक बार फिर गूँजी हिन्दी

ब्रिटिश संसद के उच्च सदन हाउस ऑफ लार्ड्स में एक बार फिर गूँजी हिन्दी। ब्रिटिश सरकार के आन्तरिक सुरक्षा राज्यमन्त्री टोनी मैक्नलटी ने शुक्रवार की शाम सुप्रसिद्ध लेखिका **नासिरा शर्मा** को उनके उपन्यास 'कुइयांजान' के लिए 14वाँ अन्तर्राष्ट्रीय इन्दु शर्मा कथा सम्मान प्रदान किया। इस अवसर पर उन्होंने ब्रिटेन के हिन्दी लेखकों के लिए स्थापित पद्मानन्द साहित्य सम्मान से यॉर्क की उषा वर्मा को सम्मानित किया।

टोनी मेक्नलटी ने हिन्दी में अपने भाषण की शुरुआत की। उन्होंने कहा कि राजा और रानियाँ, मन्त्री और प्रधानमन्त्री भुला दिए जाते हैं, लेकिन साहित्य को लोग याद रखते हैं। आज हम शेक्सपीयर को ज़रूर जानते हैं लेकिन यह नहीं जानते कि उस समय के राजा या प्रधानमन्त्री कौन थे। उन्होंने ब्रिटेन में बसे एशियाई लेखकों की चर्चा करते हुए कहा कि हम अंग्रेज भले ही उनकी भाषा न समझें लेकिन हमें उनकी भावना और उत्साह का आदर करना चाहिए क्योंकि वे बड़ी संस्कृतियों के वारिस हैं। आज उनकी नई पीढ़ी पूरब और पश्चिम की संस्कृतियों के बीच दुविधाग्रस्त खड़ी है। मैं कथा यू०के० के काम की सराहना करता हूँ और संरक्षक के रूप में इससे जुड़ा हूँ। लेबर पाटी की काउंसलर ज़किया जुबैरी ने इस बात पर चिन्ता प्रकट की कि एशियाई समाज की नई पीढ़ी अपनी मातृभाषाओं से लगातार दूर होती जा रही है। ब्रिटेन में पहली पीढ़ी के अप्रवासी ही अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने कहा कि यह एशियाई लोगों की घर-घर की कहानी है कि उनके बच्चे लगातार उनकी संस्कृति से दूर जा रहे हैं। हमारे लेखकों को इस बारे में भी सोचना चाहिए।

कथा यू०के० के महासचिव तेजेन्द्र शर्मा ने कहा कि ब्रिटिश संसद में हिन्दी की बात करके हम सच्चे अर्थों में विश्वबंधुत्व की ओर बढ़ रहे हैं। इस अवसर पर उन्होंने ब्रिटेन में बसे हिन्दी प्रेमियों के लिए, भारतीय प्रकाशनों के सहयोग से, कथा यू० के० द्वारा एक बुक क्लब शुरू करने की सूचना दी।

इस अवसर पर अपने आभार वक्तव्य में नासिरा शर्मा ने कहा, ''कुइयांजान हमारी परम्परा और रिश्तों की प्यास की बात करता है। पानी रिश्तों की प्रभावित करता है। मैंने इस उपन्यास में मौसम की खुशबू और बदबू को दिखाने की कोशिश की है।

पद्मानन्द साहित्य सम्मान प्राप्त करनेवाली उषा वर्मा ने प्रवासी जीवन में हिन्दी लेखन की समस्याओं का ज़िक्र करते हुए कहा कि निरन्तर लिखने में कई प्रकार की बाधाएँ खड़ी हो जाती हैं। संघर्ष, उदासी और आकांक्षाएँ—सबको रचना में समेटना आसान नहीं होता।

## शिवकुमार गोयल व अशोक 'चक्रधर' सम्मानित

विगत दिनों श्री ब्रजनिधि सेवा ट्रस्ट, वृन्दावन द्वारा आयोजित एक भव्य समारोह में प्रसिद्ध कवि **डॉ० अशोक 'चक्रधर'** को 'स्वामी मेघश्याम स्मृति सम्मान' तथा वरिष्ठ पत्रकार **श्री शिवकुमार गोयल** को 'पत्रकारिता सम्मान' से अलंकृत किया। काव्य के लिए सुविख्यात गीतकार **डॉ० विष्णु सक्सेना** भी सम्मानित किए गए।

## राजेन्द्र केडिया 'सरस्वती सेवा पुरस्कार' से सम्मानित

कोलकाता। राजस्थान का 'सरस्वती सेवा पुरस्कार' इस वर्ष कोलकाता के हिन्दी और राजस्थानी भाषा के साहित्यकार **राजेन्द्र केडिया** को दिया गया है। राजस्थान में आयोजित इस समारोह की अध्यक्षता श्री दुर्गाप्रसाद अग्रवाल ने की। समारोह के मुख्य अतिथि श्री नन्द भारद्वाज एवं प्रधान वक्ता श्री भंवर सिंह सामौर ने श्री केडिया के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। कोलकाता निवासी श्री राजेन्द्र केडिया की अब तक तीन चर्चित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकीं हैं, जिनमें दो कहानी-संग्रह—'तीसरा नर' तथा 'जाट रे जाट' एवं एक उपन्यास—'जोग संजोग' है।

## कंवल एवं टिवाणा को 'पंजाबी साहित्य रत्न अवार्ड'

प्रसिद्ध उपन्यासकार **श्री जसवंत सिंह कंवल** और लेखिका **श्रीमती दिलीप कौर टिवाणा** को पंजाब सरकार ने वर्ष 2007 और 2008 के लिए 'पंजाबी साहित्य शिरोमणि अवार्ड' देने की घोषणा की है। 14 पुरस्कारों की घोषणा की गई है, जिनमें **श्री करतार सूरी** और **श्री प्रगट सिंह** को 'शिरोमणि पंजाबी साहित्यकार', 'शिरोमणि हिन्दी साहित्यकार' के लिए **डॉ० चंद्र त्रिखा** और **श्रीमती वरिंदर संधू**, 'शिरोमणि उर्दू साहित्यकार' के लिए **श्री प्रेम कुमार नजर** और **डॉ० नाशिर नकवी**, 'शिरोमणि संस्कृत साहित्यकार' के लिए **डॉ० बृज बिहारी चौबे** व **डॉ० रविंदर कौर**, 'शिरोमणि पंजाबी कवि' के लिए **डॉ० हरविंदर सिंह महबूब** और **श्रीमती सुखविंदर अमृत**, 'शिरोमणि पंजाबी ज्ञान साहित्यकार आलोचक' के लिए **डॉ० करनैल सिंह थिंद** और **डॉ० जसविंदर सिंह**, 'शिरोमणि पंजाबी साहित्यकार' (विदेशी) के लिए **श्री परमिंदर सोढ़ी** और **श्री फखर जमां** को दिया जाएगा।

## 23 विद्वानों को सम्मान

इस वर्ष स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर संस्कृत, पाली प्राकृत, अरबी, फारसी के 23 विद्वानों को उनके महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए सम्मानित किया गया। ये विद्वान् हैं—प्रो० के० हयवदन पुराणिक, डॉ० विष्णुभाटला सुब्रह्मण्य शास्त्री, डॉ० उमा रमण झा, प्रो० अरुणा गोयल, नरदेव शास्त्री, डॉ० एम०ई० रंगाचार, डॉ० केशवराव मुसलगाँवकर, सरोजा भाटे, पं० बैकुंठ बिहारी नंद, पं० सत्यनारायण शास्त्री, अनंतकृष्ण शिवरामकृष्ण शास्त्री, जनार्दन पाण्डेय, पं० पुरुषोत्तम त्रिपाठी, भवानीप्रसाद भट्टाचार्य, डॉ० सतीतनाथ आचार्य (सभी संस्कृत), प्रो० गोकुल चन्द्र जैन (पाली प्राकृत), डॉ० जोहरुल बारी आजमी, मोहम्मद बुरहानुद्दीन संभाली, डॉ० तकीउद्दीन नाडवी (अरबी), डॉ० इदरिस अहमद, डॉ० सय्यदा बिलकिस फातिमा हुसैनी और प्रो० मरघूब बनिहाली (फारसी)। इनके अलावा संस्कृत के एक और विद्वान प्रो० के रामसुब्रमणियन को 'महर्षि बादरायण व्यास सम्मान' प्रदान किया गया। ये सम्मान हर वर्ष स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर दिए जाते हैं।

## 29 शिक्षकों को राष्ट्रीय पुरस्कार

राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए चुने गए उत्तर प्रदेश के 29 शिक्षकों को विगत दिनों **राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल** ने दिल्ली के अशोका होटल में आयोजित समारोह में सम्मानित किया। पुरस्कार पाने वाले शिक्षकों में 18 प्राइमरी व उच्च प्राइमरी, नौ माध्यमिक तथा दो संस्कृत स्कूलों के हैं। राजधानी के सहाय सिंह बालिका इण्टर कॉलेज, नरही की प्रधानाचार्या **नीलिमा तिवारी** को भी राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए चुना गया। लखनऊ के प्राइमरी व उच्च प्राइमरी स्कूलों के किसी भी शिक्षक को इस बार राष्ट्रपति पुरस्कार नहीं मिला।

राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करने वाले सर्वाधिक तीन-तीन शिक्षक मुजफ्फरनगर व वाराणसी से चुने गए। लखनऊ के केवल एक शिक्षक को ही राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। प्राइमरी व उच्च प्राइमरी स्कूलों में पूर्व माध्यमिक स्कूल कछार सोनभद्र के प्रधानाध्यापक **ओमप्रकाश त्रिपाठी**, पूर्व माध्यमिक स्कूल, जवान, झाँसी के सहायक अध्यापक **दिनखान मनसूरी**, उच्च प्राइमरी स्कूल, सिंगारपुर के प्रधानाध्यापक **सालिक राम मौर्या**, जूनियर हाईस्कूल, स्वहेरी, बिजनौर के हेड टीचर **राजपाल सिंह**, प्राइमरी स्कूल, इकरामपुर के हेड **हरगेंद राम**, प्राथमिक स्कूल, नवीन कुलपहाड़ के हेड **प्रेम नारायण चौबे**, गर्ल्स हायर प्राइमरी स्कूल, भोकेहरी, मुजफ्फरनगर की प्रधानाध्यापिका **शकुन्तला देवी**, जूनियर हाईस्कूल जिला बेसिक शिक्षा परिषद, इटावा के प्रधानाध्यापक **डॉ० जलील अहमद**, गर्ल्स जूनियर हाईस्कूल, बासडिला महन्त, कुशीनगर के **रामप्रसाद लाल**, कन्या उच्च प्राइमरी स्कूल पंचमुखी, मुजफ्फरनगर की **राजेश्वरी देवी**, अपर प्राइमरी स्कूल, खुटियाना, एटा के सहायक अध्यापक **दयानन्द श्रीवास्तव**, कन्या जूनियर हाईस्कूल, परगना तिवारी, देवरिया की हेड **विमला देवी श्रीवास्तव**, जूनियर हाईस्कूल, सलेरी, शाहजहाँपुर के सहायक

अध्यापक **गोपाल सिंह**, पूर्व माध्यमिक विद्यालय, करौंदी तारुन, फैजाबाद के प्रधानाध्यापक **काशीराम**, जूनियर हाईस्कूल, बहलोलपुर, गाजीपुर के **देवभूषण राम**, प्राथमिक पूर्वी पाठशाला, मुजफ्फरनगर के हेड **सीताराम**, जूनियर हाईस्कूल, शेरकोट, बिजनौर की हेड **आभावती** तथा जूनियर हाईस्कूल, महुवन, देवरिया के विशेष शिक्षक **कामता प्रसाद** को राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। माध्यमिक स्कूलों की श्रेणी में बीएनएसडी शिक्षा निकेतन, मेसटन रोड, कानपुर की प्रधानाचार्या **डॉ० गीता मिश्रा**, राणा संग्राम सिंह इण्टर कॉलेज, विशहरा, गौतमबुद्ध नगर के प्रधानाचार्य **संतोष कुमार सिंह**, नगरपालिका कन्या इण्टर कॉलेज, नवाबगंज, गोण्डा की प्रधानाचार्या **मीना वर्मा**, महात्मा गाँधी इण्टर कॉलेज, गोरखपुर के प्रधानाचार्य **डॉ० राधेश्याम सिंह**, सी एम एंग्लो बंगाली कॉलेज, भेलूपुरा, वाराणसी के अर्थशास्त्र के प्रवक्ता **चन्द्रमोहन श्रीवास्तव**, किसान इण्टर कॉलेज, मिर्जामुराद के इतिहास के प्रवक्ता **सुरेन्द्र कुमार त्रिपाठी**, श्री चित्रा गुप्ता इण्टर कॉलेज, आगरा रोड, मैनपुरी के प्रधानाचार्य **डॉ० वीरेन्द्र सिंह यादव** तथा राजकीय जुबिली इण्टर कॉलेज, गोरखपुर के विशेष शिक्षक **बंश बहादुर राय** को भी राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। संस्कृत स्कूलों में यह पुरस्कार श्रीमायानन्द गिरी संस्कृत महाविद्यालय, वाराणसी के शिक्षक **हरिदत्त पाण्डेय** तथा श्री महर्षि वाल्मीकि आश्रम धर्म सिंह संस्कृत माध्यमिक विद्यालय, रायपुरवा, चित्रकूट के कार्यवाहक प्रधानाचार्य **चन्द्रदत्त पाण्डेय** को मिला। इन शिक्षकों को राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने मेडल, प्रशस्ति-पत्र तथा 25 हजार रुपये देकर सम्मानित किया।

## मध्यप्रदेश लेखक संघ, भोपाल का वार्षिक साहित्यकार सम्मान

मध्यप्रदेश लेखक संघ, भोपाल के वार्षिक साहित्यकार सम्मान के अन्तर्गत महापौर श्री सुनील सूद द्वारा वर्ष 2008 के लिए अम्बाला (हरियाणा) की मासिक पत्रिका 'शुभ तारिका' की सम्पादक **श्रीमती उर्मि कृष्ण** को 'अक्षर आदित्य सम्मान' (रुपये 5000) से सम्मानित गया। साथ ही सर्वश्री **डॉ० श्यामसुन्दर निगम,** उज्जैन को समीक्षा सम्मान (रुपये 2500); **रविशंकर परसाई,** पिपरिया को व्यंग्य सम्मान (रुपये 2100); **कमलचन्द वर्मा,** महू, **अजीज अंसारी**, इन्दौर तथा **डॉ० दुर्गा पाठक,** जबलपुर को सारस्वत सम्मान, **शिवप्रसाद पाण्डेय 'सिद्धार्थ',** भोपाल; **श्रीमती चेतना भाटी,** इन्दौर; **डॉ० शिव चौरसिया,** उज्जैन; **प्रमाद भार्गव,** शिवपुरी; **दिनेश प्रभात,** भोपाल; **डॉ० अनीता नायक,** दमोह; **कु० दिव्या प्रसाद,** भोपाल एवं प्रसिद्ध पैरोडीकार **राकेश वर्मा 'हैरत'** प्रत्येक को रुपये 1100 के प्रायोजित विविध पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

## प्रो० राजमणि शर्मा सम्मानित

भारत के विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के हिन्दी प्राध्यापकों, हिन्दी साहित्यकारों एवं हिन्दी सेवियों की एकमात्र अखिल भारतीय संस्था—भारतीय हिन्दी परिषद, केन्द्रीय कार्यालय, इलाहाबाद ने विगत दिनों चित्रकूट में आयोजित अपने सैंतीसवें अधिवेशन के अवसर पर हिन्दी साहित्य में गहन अनुशीलन, अध्ययन, अनुसंधान एवं प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में दीर्घकालीन सेवाओं और बहुमूल्य योगदान के लिए हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पूर्व आचार्य **प्रो० राजमणि शर्मा** को सम्मानित किया। इस अवसर पर सम्मानित अन्य साहित्यकार थे—डॉ० गिरिराज किशोर-कानपुर, डॉ० देवेन्द्र दीपक-भोपाल एवं डॉ० कैलाश वाजपेयी-दिल्ली।

## लोकार्पण एवं सम्मान अर्पण समारोह सम्पन्न

इलाहाबाद के प्रतिष्ठित प्रकाशन-संस्थान 'साहित्य भंडार' के स्वत्वाधिकारी श्री सतीश चन्द्र अग्रवाल की पत्नी स्व० श्रीमती मीरा की स्मृति में 'प्रथम मीरा स्मृति सम्मान समारोह' के०पी० कम्युनिटी सेंटर, इलाहाबाद में आयोजित किया गया। इस अवसर पर **श्री सीताराम गुप्त** को बालसाहित्य के लिए 'मीरा स्मृति विशिष्ट सम्मान' और 11 अन्य विद्वानों को 'मीरा स्मृति सम्मान-2008'—**प्रो० सुरेशचन्द्र पाण्डेय** को संस्कृत और भाषाविज्ञान के लिए, **प्रो० राधाकांत वर्मा** को इतिहास, पुरातत्त्व और संस्कृति के लिए, **प्रो० एन०आर० फारुकी** को मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास के लिए, **प्रो० राजलक्ष्मी वर्मा** को भारतीय दर्शन और संस्कृति के लिए, **डॉ० रजनीश प्रसाद मिश्र** को भारतीय संस्कृति और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के लिए, **डॉ० मत्स्येन्द्र शुक्ल** को सर्जनात्मक लेखन के लिए, **डॉ० कृष्णकुमार अस्थाना** को पत्रकारिता के लिए, **डॉ० हूँदराज बलवाणी** को बहुभाषी सर्जनात्मक लेखन के लिए, **श्रीकृष्ण 'शलभ', श्री कृष्णकुमार 'आशु'** और **श्री महेश सक्सेना** को बाल साहित्य के लिए उत्तर प्रदेश के शिक्षा मंत्री डॉ० राकेशधर त्रिपाठी के हाथों प्रदान किया गया।

## डॉ० सुनील को युवा साहित्यकार सम्मान

पण्डित प्रताप नारायण मिश्र स्मृति चतुर्दश युवा साहित्यकार सम्मान **डॉ० सुनील विक्रम सिंह** को उनके उपन्यास 'काँपता हुआ इन्द्रधनुष' के लिए दिया गया। सम्मान स्वरूप पाँच हजार रुपये की राशि, प्रताप नारायण रचित साहित्य, अंगवस्त्र, स्मृति चिह्न, प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया। उपन्यास की कथा मारीशस के हरे-भरे परिवेश और प्रवासी भारतीयों के जीवन से इलाहाबाद की सड़कों और बनारस के घाटों तक फैली हुई है। यह सम्मान चालीस वर्ष तक की उम्र के देश भर से चुने गए उन रचनाकारों को मिलता है जिन्होंने काव्य, कथा, साहित्य, नाटक, बाल साहित्य, पत्रकारिता, संस्कृत और किसी अन्य भाषा में उल्लेखनीय कार्य किया हो।

## चन्द्रभान भारद्वाज को विद्या वारिधि सम्मान

'दून द्रोण आदिम विकास समिति' एवं 'साहित्य प्रभा' देहरादून (उत्तराखण्ड) द्वारा चर्चित हिन्दी ग़ज़लकार **श्री चन्द्रभान भारद्वाज** को उनके ग़ज़ल संग्रह 'हवा आवाज़ देती है' पर 'विद्या वारिधि सम्मान 2008' प्रदान कर सम्मानित किया गया।

## डॉ० राधेश्याम शर्मा स्मृति सम्मान एवं व्याख्यान समारोह (चतुर्थ) 2008 सम्पन्न

जयपुर, विगत 28 अगस्त, 2008 को डॉ० राधेश्याम शर्मा स्मृति संस्थान एवं रोटरी क्लब जयपुर हैरिटेज के संयुक्त तत्त्वावधान में डॉ० राधेश्याम शर्मा स्मृति सम्मान एवं व्याख्यान समारोह (चतुर्थ) 2008 सम्पन्न हुआ। उदयपुर के वरिष्ठ मनीषी साहित्यकार एवं समाजसेवी **श्री भगवतीप्रसाद देवपुरा** को डॉ० राधेश्याम शर्मा स्मृति सम्मान (चतुर्थ) से अलंकृत किया गया।

डॉ० राधेश्याम शर्मा स्मृति संस्थान के अध्यक्ष श्री राधेश्याम धूत ने श्री भगवतीप्रसाद देवपुरा को प्रशस्तिका प्रदान की। कार्यक्रम के अध्यक्ष देवर्षि कलानाथ शास्त्री ने उन्हें उत्तरीय (शॉल) ओढ़ाया तथा स्व० डॉ० राधेश्याम शर्मा की धर्मपत्नी श्रीमती प्रेमवती शर्मा एवं पुत्र डॉ० कृष्णगोपाल शर्मा ने उन्हें श्रीफल के साथ 11,000/- रुपये की सम्मान राशि भेंट की।

## डॉ० पाल को ब्रजभाषा साहित्य सम्मान

विगत दिनों उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ के निराला सभागार में सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं समीक्षक **डॉ० हरिसिंह पाल** को उनके उत्कृष्ट लेखन एवं शोध कार्य के लिए 'ब्रजभाषा साहित्य साधना सम्मान' से समलंकृत किया गया। समारोह की अध्यक्षता प्रख्यात भाषाविद् डॉ० सूर्यप्रकाश दीक्षित ने की। श्री गोपाल चतुर्वेदी, अध्यक्ष उ०प्र० भाषा संस्थान मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उ०प्र० हिन्दी संस्थान की डॉ० अमिता दुबे ने समारोह का संचालन करते हुए डॉ० पाल का परिचय प्रस्तुत किया।

## पुनीत बिसारिया सम्मानित

गौतम बुद्ध पंचशील शोध-साहित्य-संस्कृति संस्थान द्वारा युवा समीक्षक **डॉ० पुनीत बिसारिया** को उनके योगदान के लिए 'साहित्य सेवा श्री' सम्मान अरुणाचल प्रदेश के पूर्व राज्यपाल माता प्रसाद ने प्रदान किया। इस अवसर पर डॉ० रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर', डॉ० रामनरेश, डॉ० चम्पा श्रीवास्तव तथा डॉ० मधुकर अस्थाना को भी सम्मानित किया गया।

# पुस्तक परिचय

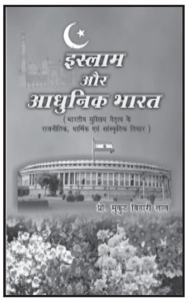


## इस्लाम और आधुनिक भारत ( भारतीय मुस्लिम नेतृत्व के राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक विचार )

लेखक : **प्रो० मुकुटबिहारी लाल**
सम्पादक : **सत्यप्रकाश मित्तल**
प्रथम संस्करण : 2009
पृष्ठ : 136

सजिल्द: रु० 150.00/ ISBN: 978-81-7124-677-9
अजिल्द: रु० 90.00/ ISBN: 978-81-7124-678-6
*प्रकाशक* : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

इस युग में परिवर्तनशील आधुनिक जगत से सामंजस्य स्थापित करना इस्लाम धर्म की मुख्य समस्या है। लोकतंत्र, राष्ट्रवाद और धर्मनिरपेक्षता आज की ऐसी बुनियादी संस्थाएँ और पद्धतियाँ हैं, जिनसे इस्लाम अपना सामंजस्य नहीं स्थापित कर पा रहा है। धर्म के मूल तत्त्वों को क्षति पहुँचाए बिना इन सब संस्थाओं के लिए मार्ग कैसे समतल किया जाय, इसका भार मुख्यत: उदार मुस्लिम नेतृत्व पर है। अब तक जो प्रयत्न हुए हैं, वे पर्याप्त सिद्ध नहीं हुए। जिन मुस्लिम नेताओं ने इस दिशा में कदम बढ़ाए, मुस्लिम जनता ने उनके नेतृत्व को स्वीकार नहीं किया। भारत में आज भी साधारण मुस्लिम जनता पर पुरातनपंथी मौलवियों की पकड़ मज़बूत बनी हुई है।

आज से प्राय: डेढ़ सौ साल पहले सर सैयद अहमद ख़ाँ ने इस ओर क़दम बढ़ाया था। इस पुस्तक में उनके कार्यों तथा विचारों की कुछ विस्तार से चर्चा की गई है। उनके अनुसार— ''धार्मिक मामलों में (हदीस में) वर्णित (मुहम्मद साहब की) उक्तियों (वचनों) का पालन अनिवार्य है, किन्तु सांसारिक मामलों में मुसलमान उन्हें मानने को बाध्य नहीं है।... जगत परिवर्तनशील है....इस परिवर्तन के साथ आचार-विचार, रीति-रिवाज और आवश्यकताएँ बदलती रहती हैं। अत: पुरानी बातों से काम नहीं चल सकता। जितनी हानि रूढ़िवाद से इस्लाम को हुई है, उतनी किसी दूसरी बात से नहीं हुई। रूढ़िवादिता सच्चे इस्लाम के लिए संखिया से भी अधिक घातक है।''

इस पुस्तक में इन सभी समस्याओं पर पन्द्रह मुस्लिम नेताओं के विचार दिए गए हैं। आज की परिस्थिति में ये विचार प्रस्तुत समस्याओं का समाधान खोजने में सहायक हो सकते हैं।

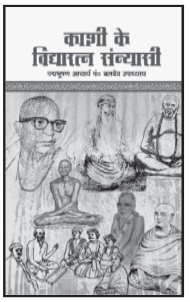


## काशी के विद्यारत्न संन्यासी

**पद्मभूषण आचार्य पं० बलदेव उपाध्याय**

प्रथम संस्करण : 2008
पृष्ठ : 132

अजिल्द : रु० 60.00/ ISBN: 978-81-7124-668-7
*प्रकाशक* : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

काशीस्थ मनीषियों ने वेदान्त के प्रसार तथा प्रचार के निमित्त जो कार्य किया, वह वेदान्त के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से अंकित करने योग्य है। तथ्य तो यह है कि वेदान्त की सार्वभौम मौलिक रचनाओं के निमित्त दार्शनिक समाज काशी के विद्वानों का चिरऋणी रहेगा। इस अभिनव प्रयास में विरक्त संन्यासियों तथा अनुरक्त गृहस्थों, दोनों का सम्मिलित योगदान सदैव श्लाघनीय तथा स्मरणीय रहेगा। विद्वान् संन्यासियों के रचनाकलाप का अनुशीलन करने से एक विशिष्ट तथ्य की अभिव्यक्ति होती है और वह है ज्ञानमार्गी ग्रन्थों के प्रणयन के साथ ही भक्तिमार्गी ग्रन्थों का निर्माण। आदि शङ्कराचार्य ने काशी को अपनी कर्मस्थली बनाकर उसे गौरव ही प्रदान नहीं किया, अपितु उस प्राचीन परम्परा का भी अनुसरण किया जो विद्वानों से अपने सिद्धान्तों के परीक्षण तथा समीक्षण के लिए काशी में आने के लिए आग्रह करती थी।

काशीस्थ विद्वानों का अद्वैत के प्रति दृढ़ आग्रह और अद्वैतविषयक ग्रन्थों के प्रणयन के प्रति नैसर्गिक निष्ठा बोधगम्य है। यहाँ विशिष्ट वेदान्त-तत्त्वज्ञ संन्यासियों का ही संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है—श्री गौड़ स्वामी, श्री तैलंग स्वामी, स्वामी भास्करानन्द सरस्वती, स्वामी मधुसूदन सरस्वती, श्री देवतीर्थ स्वामी, स्वामी महादेवाश्रम, स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती, स्वामी ज्ञानानन्द, स्वामी करपात्रीजी, दतिया के स्वामीजी, स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती।

'अद्वैतसिद्धि' के प्रणेता श्री मधुसूदन सरस्वती एक साथ ही प्रौढ़ दार्शनिक तथा सहृदय भक्त दोनों थे। 'अद्वैतसिद्धि' जैसे प्रमेयबहुल तार्किक ग्रन्थ के निर्माण का श्रेय जहाँ उन्हें प्राप्त है, वहीं 'भक्तिरसायन' जैसे भक्तिरस के प्रतिष्ठापक ग्रन्थ की रचना का गौरव भी उन्हें उपलब्ध है। चतुर्दशशती के वेदान्तज्ञ संन्यासियों में स्वामी ज्ञानानन्द का विशिष्ट स्थान था। आज भी करपात्रीजी महाराज की, जहाँ कट्टर अद्वैत के प्रतिपादन में तार्किक बुद्धि का विलास मिलता है, वहीं 'रासपञ्चाध्यायी' के विशद अनुशीलन में तथा 'भक्तिरसार्णव' जैसे भक्तिरस के संस्थापक ग्रन्थ के निर्माण में उनका भक्तिरसाप्लुत स्निग्ध हृदय भी अभिव्यक्त होता है। काशी के अद्वैती संन्यासियों की यह परम्परा आज भी जागरूक है।

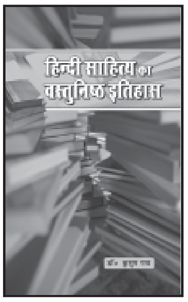


## हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास

[दसवीं शताब्दी से उन्नीसवीं शताब्दी तक] (साहित्य इतिहास)

**डॉ० कुसुम राय**

प्रथम संस्करण : 2008
पृष्ठ : 592

सजिल्द: रु० 400.00/ ISBN: 978-81-7124-623-6
अजिल्द: रु० 250.00/ ISBN: 978-81-7124-624-3
*प्रकाशक* : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

वैसे तो हिन्दी साहित्य के इतिहास की कई पुस्तकें उपलब्ध हैं। लेकिन प्रश्नोत्तर शैली में लिखा गया यह पहला इतिहास-ग्रन्थ है। इससे छात्रों और शोधार्थियों का रास्ता काफी सुगम हो गया है क्योंकि लिखित और मौखिक परीक्षाओं में वस्तुनिष्ठ प्रश्न ही पूछे जाते हैं।

अब छात्रों और शोधार्थियों को विभिन्न इतिहास-ग्रन्थों का अध्ययन नहीं करना पड़ेगा क्योंकि विदुषी लेखिका ने लगभग सभी इतिहास-लेखक विद्वानों के मतों का समावेश इस पुस्तक में किया है। यह पुस्तक पढ़ने के बाद छात्र इस तरह की अटकलों से भी बच जाएँगे कि परीक्षा में किस तरह के सवाल पूछे जा सकते हैं।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल, डॉ० रामकुमार वर्मा, डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त से लेकर अब तक के हिन्दी के सभी विद्वानों के मत इस पुस्तक में समाविष्ट हैं, इसलिए सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में उन्हें इन पुस्तकों के पढ़ने की आवश्यकता नहीं रह गई है।

भाषा-विज्ञान के छात्रों के लिए भी यह पुस्तक काफी उपयोगी है। हिन्दी भाषा के विकास के विभिन्न सोपानों का परिचय कराया गया है। 'पूर्व पीठिका' शीर्षक के अन्तर्गत भारोपीय परिवार से हिन्दी भाषा का सम्बन्ध, भारतीय आर्य भाषाओं का अनुभव, लौकिक संस्कृत, प्राकृत, पालि और अपभ्रंश से खड़ी बोली हिन्दी के विकास और हिन्दी भाषा की विभिन्न बोलियों का सम्यक विवेचन किया गया है। लेखिका ने साहित्य के इतिहास-लेखन की समस्याओं पर विस्तार से प्रकाश डाला है और विभिन्न आधिकारिक विद्वानों के विचार उद्धृत किए हैं। इसमें हर सम्भव पठनीय सामग्री देकर पुस्तक को छात्रोपयोगी बनाने का भरसक प्रयास किया है और इसमें वह पूरी तरह सफल हुई हैं।

आज जब गहन अध्ययन और विश्लेषण के अलावा तथ्यात्मक सामग्रियों के अर्जन और ग्रहण पर लगातार बल दिया जा रहा है, अध्यापन और शिक्षण के तरीके भी बदले हैं, ऐसे में विषयों के वस्तुनिष्ठ अध्ययन की आवश्यकता बढ़ जाती है। डॉ० कुसुम राय ने अपने गहन शोध और अध्ययन से इस पुस्तक में आदिकाल से रीतिकाल तक का सब कुछ समेट लिया है।

# विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

## सामाजिक विज्ञान तथा विज्ञान

### ● समाजशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान

**भारतीय संस्कृति की भूमिका** *हृदयनारायण दीक्षित* 250
**सांस्कृतिक अनुभूति : राजनीतिक प्रतीति** *हृदयनारायण दीक्षित* 160
**भारतीय समाज : राजनीतिक संक्रमण** *हृदयनारायण दीक्षित* 160
**सामाजिक परिवर्तन में कला एवं साहित्य** *डॉ० जुगनू पाण्डेय* 180
**भारत में जातिप्रथा और दलित ब्राह्मणवाद** *बच्चन सिंह* 180
**भारतीय समाज एवं संस्कृति : परिवर्तन की चुनौती** *सम्पा० : सत्यप्रकाश मित्तल* 380
**एक विश्व : एक संस्कृति** *राष्ट्रिय पण्डित श्री व्रजवल्लभ द्विवेदी* 150
**राष्ट्रीयता का तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य** *सुदर्शन पण्डा* 120
**प्राचीन भारतीय समाज और चिन्तन** *डॉ० चन्द्रदेव सिंह* 150
**भारतीय सामाजिक एवं आर्थिक चिंतन** *कृष्णकुमार सोमानी* 75
**हिन्दू समाज : संघटन और विघटन** *डॉ० पुरुषोत्तम गणेश सहस्रबुद्धे* 80
**उत्तिष्ठ कौन्तेय** *(हिन्दुत्व एवं आधुनिक विश्व)* *डॉ० डेविड फ्रॉली एवं अनुवादक : केशवप्रसाद कायाँ* 250
**भारत के नव-निर्माण का आह्वान** *डॉ० डेविड फ्रॉली एवं अनुवादक : केशवप्रसाद कायाँ* 320
**समाजशास्त्र** *मॉरिस गिन्सबर्ग* 25
**सामाजिक जनांकिकी** *नीलकंठ शा० देशपांडे* 80
**अपराध के नये आयाम तथा पुलिस की समस्याएँ** *परिपूर्णानन्द वर्म्मा* 50
**पुलिसकर्मियों की समस्याएँ : समाजवैज्ञानिक अध्ययन** *डॉ० विजयप्रताप राय* 300
**भारतीय पुलिस** *परिपूर्णानन्द वर्म्मा* 80
**सामाजिक व्यवस्था में पुलिस की भूमिका** *चमनलाल प्रद्योत* 40
**भारतीय संस्कृति के मूलतत्त्व** *(संस्कार, वर्णाश्रम व्यवस्था, पुरुषार्थ-चतुष्टय)* *राष्ट्रिय पण्डित श्री व्रजवल्लभ द्विवेदी* 60
**भारतीय राष्ट्रवाद** सं० : *डॉ० सत्येन्द्र त्रिपाठी व डॉ० कृष्णदत्त द्विवेदी* 80
**भारतीय राष्ट्रवाद : स्वरूप और विकास** *सम्पा० : डॉ० सत्येन्द्र त्रिपाठी* 60
**भारतीय समाज और संस्कृति** *सम्पा० : डॉ० कृष्णदत्त द्विवेदी* 80
**जनोपनिषद** *भरत गांधी* 200
**क्षत्रियों की उत्पत्ति एवं विकास** *डॉ० सरोज रानी* 200
**Drug Abuse : Problem and Prevention** *C.D. Singh, R.S. Singh* 200
**गांधीवाद : विविध आयाम** *डॉ० सतीशकुमार* 120
**भारत की चुनावी राजनीति के बदलते आयाम** *(बिहार राज्य के विशेष सन्दर्भ में)* *डॉ० ओमप्रकाश राय* 400
**Daishik Shastra** (Bharatiya Polity and Political Science) *Badrishah Thulgharia* 250
**Theory of Rights** (Green, Bosanquet Spencer and Laski) *Dr. Nalini Pant* 100
**उदारवाद और गोपालकृष्ण गोखले** *डॉ० सतीशकुमार* 60
**भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन** *(1857-1947)* *डॉ० राजेन्द्रप्रसाद सिंह* 30
**अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्ध** *(फ्रेंकफर्ट की सन्धि से द्वितीय विश्वयुद्ध तक)* *डॉ० नलिनी पंत* 80

### ● नारी विमर्श (Women Studies)

**स्त्रीत्व : धारणाएँ एवं यथार्थ** *प्रो० कुसुमलता केडिया, प्रो० रामेश्वरप्रसाद मिश्र* 120
**उत्तर शती के उपन्यासों में स्त्री** *डॉ० शशिकला त्रिपाठी* 120
**काशी में मोक्षकामी प्रवासी विधवाएँ** *सत्यप्रकाश मित्तल, रामलखन मौर्य* 200 *प्रस्तावना : डॉ० बैद्यनाथ सरस्वती*

### ● धर्म तथा दर्शन

**समाज-दर्शन की भूमिका** *डॉ० जगदीशसहाय श्रीवास्तव* 150
**आधुनिक तर्कशास्त्र की रूपरेखा** *डॉ० डी०ए० गंगाधर* 20
**भारतीय दर्शन : सामान्य परिचय** *(सांख्य, योग, वेदान्त, बौद्ध एवं जेन दर्शन)* *राष्ट्रिय पण्डित श्री व्रजवल्लभ द्विवेदी* 60
**भारतीय दर्शन का सुगम परिचय** *डॉ० शिवशंकर गुप्त* 80
**धर्म, दर्शन और विज्ञान में रहस्यवाद** *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा, डॉ० वसुन्धरा मिश्र* 250
**दिव्य प्रतीक** *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 100
**सोमतत्त्व** *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 100
**दर्शन, धर्म तथा समाज*** *राजाराम शास्त्री* 350
**बौद्ध एवं जैन-धर्म तथा दर्शन** *डॉ० सत्यनारायण दूबे 'शरतेन्दु'* 90
**बौद्ध तथा जैन धर्म** *डॉ० महेन्द्रनाथ सिंह* 180
**सनातन हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म** *श्यामसुन्दर उपाध्याय* 75
**सिख धर्म और संस्कृति** *डॉ० अमरसिंह वधान* 120
**उदारवाद और गोपालकृष्ण गोखले** *डॉ० सतीशकुमार* 60
**विकासवाद और श्री अरविन्द** *डॉ० जयदेव सिंह* 20
**गांधीवाद : विविध आयाम** *डॉ० सतीश कुमार* 120
**वेद व विज्ञान** *स्वामी प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* 180
**वेदान्त और आइन्सटीन** *अनिल भटनागर* 100
**Modern Indian Mysticism*** (3 Vols.) *Sobharani Basu* (per Set) 250

### ● शिक्षा तथा मनोविज्ञान

**प्रारम्भिक सांख्यिकीय विधियाँ** *डॉ० प्रवीणचन्द्र श्रीवास्तव* 280
**प्रारम्भिक शिक्षा के मूलभूत तत्त्व** *डॉ० प्रवीणचन्द्र श्रीवास्तव* 200
**भौतिक विज्ञान-शिक्षण** *डॉ० प्रवीणचन्द्र श्रीवास्तव* 120
**नवीन शिक्षा मनोविज्ञान** *डॉ० के०पी० पाण्डेय* 250
**शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार** *डॉ० के०पी० पाण्डेय* 250
**शैक्षिक अनुसंधान** *डॉ० के०पी० पाण्डेय* 180
**पर्यावरण शिक्षा एवं भारतीय सन्दर्भ** *डॉ० के०पी० पाण्डेय, डॉ० अमिता भारद्वाज, डॉ० आशा पाण्डेय* 250
**शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी** *डॉ० के०पी० पाण्डेय* 150
**शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन** " 150
**अर्थशास्त्र शिक्षण** *डॉ० के०पी० पाण्डेय* (यन्त्रस्थ)
**Advanced Educational Psychology** *Dr. K.P. Pandey* 450
**Fundamentals of Educational Research** *Dr. K.P. Pandey* 450
**Educational & Vocational Guidance in India** *Dr. K.P. Pandey* 300
**Teaching of English in India** *Dr. K.P. Pandey, Dr. Amita* 300
**The Educational Philosophy of W.H.Kilpatrick** *Pratibha Khanna* 300
**संसार के महान शिक्षाशास्त्री** *डॉ० इन्द्रा ग्रोवर* 60

सतत शिक्षा का सामुदायिक स्वरूप *डॉ॰ योगेन्द्रनारायण मिश्र* 60

महान् शिक्षाशास्त्रियों के सिद्धान्त *रॉबर्ट आर॰ रस्क* 100

मनोविज्ञान का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य *डॉ॰ (श्रीमती) गायत्री* 80

## • पत्रकारिता

सम्पूर्ण पत्रकारिता *डॉ॰ अर्जुन तिवारी* 400

आधुनिक पत्रकारिता *(पूर्णतया संशोधित एवं परिवर्धित)* *डॉ॰ अर्जुन तिवारी* 250

जनसम्पर्क : सिद्धान्त और व्यवहार *डॉ॰ अर्जुन तिवारी, विमलेश तिवारी* 300

प्रेस विधि *डॉ॰ नन्दकिशोर त्रिखा* 150

रेडियो का कला पक्ष *डॉ॰ नीरजा माधव* 80

सम्प्रेषण और रेडियो-शिल्प *विश्वनाथ पाण्डेय* 250

संसद और संवाददाता *(संसदीय रिपोर्टिंग)* *ललितेश्वरप्रसाद श्रीवास्तव* 120

समाचार और संवाददाता *काशीनाथ गोविन्द जोगलेकर* 80

संवाद-संकलन-विज्ञान *नारायण व्यंकटेश दामले* 50

हिन्दी पत्रकारिता *(भारतेन्दु पूर्व से छायावादोत्तर काल तक)* *डॉ॰ धीरेन्द्रनाथ सिंह* 50

हिन्दी पत्रकारिता का नया स्वरूप *बच्चन सिंह (पत्रकार)* 200

हिन्दी पत्रकारिता के नये प्रतिमान *बच्चन सिंह* 40

पत्र, पत्रकार और सरकार *काशीनाथ गोविन्द जोगलेकर* 120

संचारक्रान्ति और हिन्दी पत्रकारिता *डॉ॰ अशोककुमार शर्मा* 300

पत्र प्रकाशन और प्रक्रिया *शिवप्रसाद भारती* 200

स्वतंत्रता संग्राम की पत्रकारिता और पं॰ दशरथप्रसाद द्विवेदी *डॉ॰ अर्जुन तिवारी* 120

इतिहास निर्माता पत्रकार *डॉ॰ अर्जुन तिवारी* 60

'स्वदेश' की साहित्य-चेतना *डॉ॰ प्रत्यूष दुबे* 150

पराड़करजी और पत्रकारिता* *डॉ॰ लक्ष्मीशंकर व्यास* 30

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी और साहित्यिक पत्रकारिता *डॉ॰ इन्द्रसेन सिंह* 120

हिन्दी साहित्य : विविध परिदृश्य *डॉ॰ सदानन्द प्रसाद गुप्त* 160

**The Rise and Growth of Hindi Journalism (1826–1945)** *Dr. R.R. Bhatnagar, (Ed.) Dr. Dhirendra Nath Singh* 800

**Mass Communication & Development** *(Ed.) Dr. Baldev Raj Gupta* 250

**Journalism by Old and New Masters** *(Ed.) Dr. Baldev Raj Gupta* 250

**Modern Journalism & Mass Communication** *(Ed.) Dr. Baldev Raj Gupta* 250

## • चित्रकला (Drawing & Painting)

कला-दर्पण *वासुदेव बलवन्तराय स्मार्त, ज्योति चन्द्रेश ठाकोर* 200

कलागुरु केदार शर्मा के व्यंग्य-चित्रों में काशी *डॉ॰ धीरेन्द्रनाथ सिंह* 300

कला *हंसकुमार तिवारी* 150

## • सङ्गीत (Music)

संगीत की रसिक परम्परा *डॉ॰ प्रमिला प्रियहासिनी* 150

चैती *डॉ॰ शान्ति जैन* 120

सा रे ग म *(सरगम गीत)* *डॉ॰ आर॰वी॰ कविमण्डन* 160

कर्नाटक संगीत पद्धति *डॉ॰ आर॰वी॰ कविमण्डन* 120

राग जिज्ञासा* *देवेन्द्रनाथ शुक्ल* 300

भारतीय सङ्गीतशास्त्र का दर्शनपरक अनुशीलन* *डॉ॰ विमला मुसलगाँवकर* 400

भारतीय संगीत का इतिहास *डॉ॰ जयदेव सिंह* (यन्त्रस्थ)

**Indian Music*** *Dr. Thakur Jaideva Singh* 450

## • भाषण तथा संवाद विज्ञान

बोलने की कला *(वक्ता, अभिनेता, शिक्षक और जनसामान्य के लिए)* *डॉ॰ भानुशंकर मेहता* 250

## • वाणिज्य तथा अर्थशास्त्र

**Export Management and Logistics** *Dr. Usha Kiran Rai* 350

**Corporate Finance : Some Issues** *Dr. Vinod Shankar Singh, Dr. Jitendra Pratap Singh & Dr. Vinai Shankar Singh* 250

सेविवर्गीय प्रबन्ध एवं औद्योगिक सम्बन्ध *डॉ॰ जगदीश सरन माथुर* 160

भारतीय सामाजिक एवं आर्थिक चिंतन *कृष्णकुमार सोमानी* 75

अर्थशास्त्र मौखिकी *डॉ॰ सुशीलकिशोर श्रीवास्तव* 60

## • ENGLISH LITERATURE & TECHNICAL WRITING

**The Mayor of Casterbridge** *Thomas Hardy* 50

**Shakespearian Comedy** *H.B. Charlton* 120

**Shakespere : A Critical Study of His Mind & Art** *Edward Dowden* 150

**Laurence Sterne : A Critical Revaluation** *Dr. Nand Kishore Lal* 150

**Thieves in My House** (Four Studies in Indian Folklore of Protest & Change) *Ved Prakash Vatuk* 50

**New Responses to T.S. Eliot** *(Ed.) Dr. N.S. Srivastava* 80

**Introduction to Movements, Ages and Literary Forms** *Dr. R.N. Singh* 80

**Technical Writing and Communication** *Dr. R.S. Sharma* 110

## • सामान्य विज्ञान

**Indian Artificial Satellites** *Dr. S.N. Ghosh* 200

विज्ञान-कथा *डॉ॰ एस॰एन॰ घोष* 80

वैज्ञानिक अनुसंधान और आविष्कार *डॉ॰ रवीन्द्रप्रताप राव* 30

## • भूगोल (Geography)

राजनीतिक भूगोल एवं भू-राजनीति *डॉ॰ श्रीकान्त दीक्षित* 200

भौगोलिक चिन्तन : उद्‌भव एवं विकास *डॉ॰ श्रीकान्त दीक्षित* 200

**Electoral Geography of India** *Dr. S.K. Dikshit* 250

## • ZOOLOGY

**Fishes of U.P. & Bihar** *Dr. Gopalji Srivastava* 200

## • MATHEMATICS

**Nature of Mathematical Ability** *Dr. C.P.S. Chauhan* 60

## • PHYSICS

**Waves and Oscillations** (Fourth Revised & Enlarged Edition) *Dongre & Bhattacharya* 180

**University Practical Physics (with viva-voce) Part-I** *Dr. C.K. Bhattacharya* 60

**Matrices & Its Applications** *Dr. C.K. Bhattacharya* 15

## • सैन्य विज्ञान (Military Science)

फोर्स वन-थ्री-सिक्स *(द्वितीय महायुद्ध में अंग्रेजों के जासूस की कहानी उसी की जबानी)* *धर्मेन्द्र गौड़* 80

ब्रिटिश शासन और भारतीय जासूस *(बंगाल का अकाल, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की आजाद हिन्द फौज और बर्मा युद्ध)* *धर्मेन्द्र गौड़* 100

## पुस्तक परिचय

### एक थी रुचि

**बच्चन सिंह**

प्रथम संस्करण : 2008

पृष्ठ : 152

सजिल्द : रु० 150.00

ISBN : 978-81-89498-34-4

*प्रकाशक* : अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

इस उपन्यास में सामाजिक बदलाव है। बदलते रिश्तों का रेखांकन है। सामाजिक और व्यक्तिगत मूल्यों में परिवर्तन का चित्रण है। विकृत राजनीति की तस्वीर है। गाँव बदल रहे हैं। ग्राम्यजीवन के मूल्य बदल रहे हैं। चाल और चरित्र बदल रहे हैं। इस बदलाव की प्रस्तुति और आने वाले समाज का पूर्वाभास कराता है यह उपन्यास। पति के अंतर्मुखी व्यक्तित्व से आजिज आ चुकी रुचि पति-पत्नी के सम्बन्धों के नैतिक दायरे से बाहर निकल कर जो उड़ान भरती है, वह औरत की स्वतंत्रता और स्वच्छंदता का प्रतीक बन जाता है। वह पति को समर्पण के लिए बाध्य कर देती है। स्त्री अपने संघर्ष में विजयी होती है।

स्त्री-विमर्श की एक सार्थक प्रयोग-भूमि बन गया है यह उपन्यास और यही इसे एक अनूठा स्वरूप प्रदान करता है।

बच्चन सिंह यथार्थ बोध के प्रयोगधर्मी कथाकार हैं। इस उपन्यास में भी उनकी प्रयोगधर्मिता के दर्शन होते हैं। भाषा और शिल्प की ताजगी ने उपन्यास को और रोचक बना दिया है। इस रोचकता से बँधा रहता है पाठक।

### सा रे ग म [सरगम गीतों का रचना-संग्रह]

**डॉ० आर०वी० कविमण्डन**

प्रथम संस्करण : 2008

पृष्ठ : 168

अजिल्द: रु० 160.00/ ISBN: 978-81-7124-616-6

*प्रकाशक* : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

हमारा भारतीय शास्त्रीय संगीत 'राग-प्रधान' है। गाने अथवा बजाने में जो भी विस्तार या सृजन किया जाता है, उसका केन्द्र-बिन्दु राग ही होता है। थोड़े से परिश्रम से राग का समग्र स्वरूप जान लेने के उद्देश्य से 'सरगम-गीत' से अच्छा और कोई उपाय नहीं है। पुराने जमाने के उस्ताद अपने शागिर्दों को सर्वप्रथम राग का 'सरगम-गीत' भली-भाँति रटवाकर उसका खूब अभ्यास करवाते थे, जिसका आजकल नितान्त अभाव है।

यही चिन्तन करते हुए संगीतज्ञ डॉ० आर०वी०कविमण्डन को यह प्रेरणा मिली कि क्यों न फिर से 'सरगम-गीतों' की रचना की जाय ताकि विद्यार्थियों को आसानी से 'राग-ज्ञान' हो सके। इसी चिन्तन का परिणाम यह पुस्तक है। इन सरगम गीतों की रचना एक दिन में नहीं हुई है। लगभग सात वर्षों की लम्बी अवधि में इतनी रचनाएँ बन सकीं। इन रचनाओं को भातखण्डे स्वर-लिपि पद्धति में लिपिबद्ध किया गया है। इन सरगम गीतों के अतिरिक्त दैनिक अभ्यास हेतु प्रारम्भ में ही चुने हुए 31 अलंकार भी दिये गये हैं।

### आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

**डॉ० रामचन्द्र तिवारी**

तृतीय संस्करण : 2009 पृष्ठ : 200

सजिल्द: रु० 200.00/ ISBN: 978-81-7124-653-3

अजिल्द: रु० 120.00/ ISBN: 978-81-7124-669-4

*प्रकाशक* : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी के युग-निर्माता, विचारक एवं आचार्य हैं। अनेक दृष्टियों से उनका व्यक्तित्व अद्वितीय है। जिस समय हिन्दी के साहित्यकार भाषा और साहित्य के सामान्य प्रश्नों को सुलझाने का बाल प्रयास कर रहे थे, उस समय शुक्लजी अपने साहित्यिक परिवेश का अतिक्रमण कर साहित्य, दर्शन, मनोविज्ञान, इतिहास, विज्ञान आदि अनेक क्षेत्रों की नवीनतम उपलब्धियों को आत्मसात करके हिन्दी के मौलिक काव्यशास्त्र की आधार शिला रखकर विचार और चिन्तन के क्षेत्र में एक नये युग का निर्माण कर रहे थे। नि:सन्देह एक कोश निर्माता, इतिहासकार, निबन्ध लेखक, अनुवादक. आलोचक, सम्पादक और रचनाकार के रूप में आचार्य शुक्ल का अवदान अन्यतम है। इन सभी क्षेत्रों में उन्होंने पथ-प्रवर्तन का कार्य किया है। प्रस्तुत कृति में लेखक ने आचार्य शुक्ल के समग्र साहित्यिक अवदान के आकलन का विनम्र प्रयास किया है। पुस्तक का प्रथम संस्करण आचार्य शुक्ल के शताब्दी वर्ष में उनके प्रति श्रद्धा-सुमन अर्पित करने के प्रयास में लिखा गया था। हिन्दी जगत् ने पुस्तक को अपनाकर उत्साहवर्धन किया। पुस्तक के इस तृतीय संस्करण में दो अध्याय—'हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में आचार्य शुक्ल की क्रान्तदर्शी भूमिका' तथा 'आधुनिकता और आचार्य शुक्ल का लोकादर्श' बढ़ाया गया है। शेष अध्यायों में यत्र-तत्र कुछ परिवर्धन और परिष्कार किया गया है। इस प्रकार अब यह पुस्तक अधिक समृद्ध रूप में हिन्दी पाठकों को समर्पित है। हमें विश्वास है, हिन्दी जगत् इसका स्वागत करेगा।

## शीघ्र प्रकाश्य

### अमर शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी

सं० : **पुरुषोत्तमदास मोदी**

*प्रकाशक* : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

गणेश शंकर विद्यार्थी का दर्शन करने का सौभाग्य तो मुझे नहीं मिला, मेरे जन्म से तीन वर्ष बाद ही वे शहीद हो गये। वे साम्प्रदायिकता की बलिवेदी पर 25 मार्च 1931 को शहीद हुए। मुझे उनके दो समकालीन महापुरुषों के सान्निध्य से गणेश शंकर विद्यार्थीजी के जीवन और कृतित्व का दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इनमें से एक हैं श्री दशरथप्रसाद द्विवेदी जो गोरखपुर में मेरे निवास के सामने रहते थे। गणेश शंकरजी से आयु में एक वर्ष छोटे थे। दशरथजी थानेदारी के प्रशिक्षण हेतु मुरादाबाद जा रहे थे कि लखनऊ में उन्होंने गणेश शंकरजी का ओजस्वी भाषण सुना और उनकी वक्तृता से प्रभावित होकर गणेश शंकर जी की शरण में चले गये और वहाँ 'प्रताप' के सहायक सम्पादक बने। दशरथजी कहते थे कि वे गणेश शंकरजी के यहाँ केवल 40 रुपये मासिक के सहायक सम्पादक ही नहीं थे किन्तु उनके परिवार के एक सदस्य के रूप में थे।

दूसरे महापुरुष जिनसे मुझे गणेश शंकरजी के सम्बन्ध में और गहरी जानकारी मिली वह थे एक भारतीय आत्मा पं० माखनलाल चतुर्वेदी। 1945 में जब मैं गोरखपुर में सेण्ट एण्ड्रयूज कॉलेज में बी०ए० का छात्र था, हम लोगों ने अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया। उसमें पं० माखनलाल चतुर्वेदी, श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान आदि प्रमुख कवि तथा साहित्यकार पधारे। माखनलालजी का मुझे अतिशय स्नेह मिला और उनके साथ खण्डवा में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। माखनलालजी का गणेश शंकर जी से बहुत गहरा सम्बन्ध था। पं० माखनलालजी, गणेशशंकरजी के परिवार के एक सदस्य हो गये। अपनी लम्बी बीमारी के दिनों में पं० माखनलालजी कई वर्ष तक कानपुर में गणेश शंकरजी के यहाँ रहे। गणेश शंकरजी जब जेल गये, अक्टूबर 1923 से 3 मार्च 1924 तक माखनलालजी ने प्रताप का सम्पादन किया। वे गणेशजी से आयु में एक वर्ष बड़े थे।

गणेश शंकरजी का स्मरण उस समर्पणमयी पत्रकारिता का स्मरण है जब पत्रकारिता, देशभक्ति व्यवसाय नहीं थी। एक मिशन, एक लक्ष्य था। पत्रकार की कलम तलवार से भी कहीं अधिक तेज और गहरा प्रहार करती थी। आज देश को इस बलिदानी को याद करना चाहिए जिसने साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए बलिदान दिया। **—पुरुषोत्तमदास मोदी**

# अत्र-तत्र-सर्वत्र

## साहित्यकार सन्दर्भ कोश का प्रकाशन

'हिन्दी साहित्यकार सन्दर्भ कोश' के अब तक दो भाग प्रकाशित हुए हैं। अब इसका तीसरा भाग प्रकाशित करने की योजना बनाई गई है। इस कोश में सम्मलित होने के लिए साहित्यकारों से किसी प्रकार का कोई शुल्क नहीं लिया जा रहा है।

साहित्यकारों से आग्रह है कि वे अपना परिचय—नाम, जन्मतिथि व जन्मस्थान, शिक्षा, कार्यक्षेत्र, प्रकाशित कृतियाँ, पुरस्कार-सम्मान, पता, दूरभाष, ई-मेल आदि विवरण के साथ अपना नवीनतम छायाचित्र शीघ्र प्रेषित करें। छायाचित्र के पीछे अपना नाम तथा शहर का नाम अवश्य लिखें। परिचय-विवरण निम्न पते पर प्रेषित करें—हिन्दी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार, बिजनौर-246701 (उ०प्र०)

## शोध-सन्दर्भ-5 शीघ्र प्रकाशित होगा

शोध के आरम्भकाल से 2003 तक सम्पन्न शोधकार्यों की वर्गीकृत सूची 'शोध सन्दर्भ' के चार भागों में प्रकाशित की जा चुकी है। इस श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए 'शोध सन्दर्भ-5' के प्रकाशन की योजना बनाई गई है।

शोध-निर्देशकों एवं शोध-उपाधिधारकों से आग्रह है कि वे इस आयोजन में सहयोग करें। शोध-निदेशक तथा शोध-उपाधि प्राप्तकर्ता निम्न क्रम में अपना विवरण प्रेषित करें—उपाधि प्राप्तकर्ता का नाम, जन्मतिथि, शोध का विषय, विश्वविद्यालय का नाम, उपाधि वर्ष, निदेशक का नाम व पता, प्रकाशन विवरण (यदि शोध-प्रबन्ध प्रकाशित हो गया है), प्रकाशन के बाद शीर्षक, प्रकाशक का नाम व पता, प्रकाशन वर्ष, पृष्ठ संख्या, मूल्य तथा अपना पता आदि। यह विवरण हिन्दी साहित्य निकेतन 16 साहित्य विहार, बिजनौर-246701 (उ०प्र०) के पते पर प्रेषित करें। ग्रन्थ में सम्मिलित होने के लिए किसी प्रकार का कोई शुल्क नहीं है।

## चेन्नई के निकट फिशरी यूनिवर्सिटी बनाएगा टाटा

टाटा समूह ने हाल ही में घोषणा की कि उसने चेन्नई के निकट फिशरी इंस्टीट्यूट की स्थापना के लिए तमिलनाडु सरकार से हाथ मिलाया है। फिशरीज इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड ट्रेनिंग के लिए राज्य सरकार ने मुत्तूकुंडू में 1.16 एकड़ जमीन बिना कोई रुपया लिए दी है। इस सम्बन्ध में राज्य सरकार और टाटा समूह के बीच एक समझौता पत्र पर हस्ताक्षर हुए। टाटा समूह घरेलू और विदेशी मदद से फिशिंग की बेहतर तकनीक, पकड़ी गई मछलियों को रखने की व्यवस्था, मछली पालन और सी फूड से जुड़ी अन्य गतिविधियों के लिए ब्लू प्रिंट तैयार करेगा।

## दुनिया की पहली सिख यूनिवर्सिटी

पंजाब में पहली सिख यूनिवर्सिटी की स्थापना होने जा रही है। इसकी स्थापना के लिए पवित्र शहर फतेहगढ़ साहिब को चुना गया है। इस यूनिवर्सिटी का नाम श्री गुरु ग्रन्थ साहिब वर्ल्ड यूनिवर्सिटी होगा। पंजाब के मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल ने हाल ही में यूनिवर्सिटी की आधारशिला रखी। यह जगह चंडीगढ़ से 60 किलोमीटर दूर है। इसके लिए शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी ने 84 एकड़ भूमि उपलब्ध कराई है।

## दुर्दशा में दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के सरस्वती भवन स्थित पुस्तकालय में लगभग एक लाख पाण्डुलिपियाँ काफी दुर्लभ हैं, जिन्हें 13 खण्डों के 36 भाग में संग्रहित किया गया है। लेकिन ज्ञान की धरोहर की स्थिति ठीक नहीं है। पाण्डुलिपियाँ जिन कपड़ों में लपेटी गई हैं, उनमें से एक तिहाई कपड़े खराब हो चुके हैं।

सरस्वती भवन की स्थापना 1920 में हुई थी, इसके बाद से ही यहाँ पाण्डुलिपियों के संग्रह का कार्य शुरू हुआ। 1980 तक देश के विभिन्न हिस्सों से यहाँ पाण्डुलिपियाँ लाई गयीं। यहाँ सबसे दुर्लभ पाण्डुलिपि श्रीमद्भागवत पुराण की है, जो लगभग एक हजार साल पुरानी है। रास पंचाध्याय जैसी दुर्लभ पाण्डुलिपि की लिपि और चित्र स्वर्ण लिखित हैं। इसके अलावा काष्ठपत्र, ताड़पत्र, शिलापत्रों पर प्राचीन नागरी लिपि और वर्तमान देवनागरी में लिखी हुई कई पाण्डुलिपियाँ मौजूद हैं। बंगला, उड़िया, मैथिली, गुरुमुखी, अरबी, फारसी, बर्मी, तिब्बती में कई विषयों की दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ यहाँ रखी हैं लेकिन ये सभी विश्वविद्यालय की उपेक्षा की शिकार हो रही हैं, इन पाण्डुलिपियों को विशेष प्रकार के मेडिकेटेड कपड़ों में लपेटा गया है, जिनमें से कई कपड़े सड़ चुके हैं। स्थिति यह है कि इन्हें पिछले एक दशक से भी अधिक समय से बदला नहीं गया है। कीड़े-मकोड़ों से बचाने के लिए पड़ने वाली नेप्थलीन ब्रीक को बर्मा की बनी सागौन की लकड़ी के रैक में रखा गया है। दीमक से बचाव के लिए दवाओं का छिड़काव भी बरसों से नहीं हुआ है। इसके साथ ही कुछ पाण्डुलिपियों को तो लोहे की अलमारियों में बन्द कर दिया गया है, जिनमें न ही हवा लगती है और न उनकी समय से कोई देखभाल होती है। अगर आग लग जाए तो इससे बचने के लिए फायर हाइड्रेंट का इन्तजाम भी यहाँ नहीं है।

हालांकि इसमें सुधार के लिए कुछ कार्य भी हुए हैं। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली और यूनिवर्सिटी प्रशासन के बीच हुए समझौते के तहत ज्यादातर पाण्डुलिपियों की माइक्रोफिल्मिंग करा ली गयी है। इन पाण्डुलिपियों में प्रयुक्त कपड़े बदलने की योजना है और दवा का छिड़काव भी अक्टूबर में शुरू हो जाएगा। अगर इन पाण्डुलिपियों का डिजिटलाइजेशन हो जाए तो इसमें निहित विषयवस्तु लोगों तक भी पहुँच सकेगी।

## तमिलनाडु में छह नए इंजीनियरिंग कॉलेज

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम करुणानिधि ने हाल ही में छह नए इंजीनियरिंग कॉलेजों का उद्घाटन किया। यह सभी छह कॉलेज अन्ना यूनिवर्सिटी से सम्बद्ध हैं। इसके साथ ही उन्होंने तमिलनाडु ओपन यूनिवर्सिटी और तमिलनाडु स्टेट काउंसिल फॉर हायर एजुकेशन के दफ्तर का भी उद्घाटन किया।

## दुनिया से मुखातिब होंगे कवि लादेन

आतंकी, अल-कायदा सरगना, क्रूर, हत्यारा और न जाने किस रूप में दुनिया ओसामा बिन लादेन को जानती है पर इस खतरनाक दहशतगर्द का एक और पक्ष सामने आने वाला है। लादेन एक निपुण कवि है और शीघ्र ही उसकी रचनाएँ प्रकाशित होने वाली हैं। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से पढ़े एक अरबी भाषा के विशेषज्ञ ने लादेन की रचनाओं को प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। 90 के दशक में लादेन शादी और अन्य उत्सवों में कविताएँ सुनाया करते थे। इन समारोहों में रिकार्ड किए गए दुर्लभ टेप अफगानिस्तान में लादेन के आवास से 2001 में मिले। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में अरबी कविता पढ़ाने वाले प्रो० फ्लेग मिलर ने इनका अध्ययन किया। मिलर ने इन टेपों को चार साल पहले उस वक्त सुना था जब एफ बी आई के अनुवादक ने सांकेतिक संदेशों की जानकारी के लिए उन्हें नियुक्त किया। मिलर ने लादेन की 20 लयात्मक कृतियों की पहचान की है। मिलर ने बताया कि लादेन एक कुशल कवि है और वह छन्दों और अलंकारों का बखूबी प्रयोग जानता है। इसके कारण लोग लादेन के टेप को सुनना पसन्द करते हैं।

## हिन्दी के सुधार का एक अनोखा अनुष्ठान

वाराणसी। हिन्दी दिवस पर अबकी शहर के कुछ भाषा अनुरागियों ने अनोखे अनुष्ठान का मन बनाया है। साल भर चलने वाले इस कार्यक्रम में हिन्दी की सूरत सँवारने का अभिनव प्रयास होगा। कुछ लोग निकलेंगे सरकारी, गैर-सरकारी दफ्तरों और बाजारों में लगाए गए बोर्ड तथा महान व्यक्तियों की प्रतिमाओं के शिलापट्ट की दोषपूर्ण इबारत को ठीक करने। वाराणसी की यह अनोखी कोशिश है। सम्बन्धित लोगों से शुद्ध हिन्दी लिखने का आग्रह किया जाएगा। एक उत्साही हिन्दी अनुरागी कूंची और रंग लेकर तैयार बैठे हैं—गलत लिखी हिन्दी को पूरे वर्ष दुरुस्त करने के लिए। इस अभिनव प्रयास की मशाल

साहित्यकार शिवकुमार पराग, गणेश प्रसाद गम्भीर, प्रकाश श्रीवास्तव, ब्रजेन्द्र गर्ग आदि ने थाम रखी है। इनका कहना है कि वे कहीं भी लिपिबद्ध हिन्दी को दोषपूर्ण देखेंगे, तो उसे दुरुस्त करके ही दम लेंगे। भाषा अनुराग से भरे सिन्धु वर्मा पेशे से चित्रकार हैं। इनका व्रत है कि वह बोर्ड पर लिखी दोषपूर्ण हिन्दी को अपनी तूलिका से ठीक करेंगे।

### ब्रिटेन में पहले हिन्दू स्कूल की शुरुआत

ब्रिटेन का पहला सरकारी हिन्दू स्कूल 30 छात्रों के पहले बैच के साथ शुरू हो गया। इसमें ब्रिटिश शिक्षा और हिन्दू धर्म एवं सांस्कृतिक मूल्यों की मिली-जुली शिक्षा दी जाएगी। ब्रिटेन में अन्य धर्मों के ऐसे स्कूल पहले से ही चल रहे हैं लेकिन पहली बार ब्रिटिश गवर्नमेंट की ग्रांट से हिन्दू स्कूल की स्थापना की गई है। तीन साल बाद सरकार की स्वीकृति मिलने और एक करोड़ पाउण्ड के खर्च से लन्दन के हैरो उपनगर में कृष्णा अवंती प्राथमिक स्कूल की स्थापना की गई है।

ब्रिटेन के किसी भी उपनगर में सबसे ज्यादा हिन्दू हैरो में रहते हैं। स्कूल की प्रमुख नैना परमार ने बताया कि यह ब्रिटेन के दस लाख हिन्दुओं के लिए उठाया गया बहुत बड़ा कदम है। उन्होंने कहा कि हमारा उद्देश्य एक प्रभावशाली, शान्त शैक्षिक वातावरण बनाना है जहाँ वैदिक तकनीक और प्रोफेशनल एक्सरसाइज के जरिए शिक्षा दी जाएगी। तीस छात्रों के साथ शुरू पहले बैच में बाद में हरेक साल पाँच से 11 वर्ष की उम्र वाले छात्रों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ाई जाएगी। इसमें नर्सरी सहित 236 छात्रों को जगह देने का लक्ष्य है। स्कूल में ध्यान, योग और सितार एवं तबला सहित भारतीय संगीत वाद्यों का प्रशिक्षण भी दिया जाएगा। स्कूल का धार्मिक सलाहकार ब्रिटेन के इस्कान को बनाया गया है।

### वीरप्पा मोइली का 'ढोल' अब हिन्दी में

कांग्रेस के मीडिया विभाग के अध्यक्ष एम वीरप्पा मोइली का मशहूर कन्नड़ उपन्यास 'तेम्बरे' अब हिन्दी में 'ढोल' शीर्षक से आ रहा है। यह श्री मोइली के उस चेहरे को सामने लाता है जो नेताओं के प्रति जनता की नफरत से सिकुड़ा है। हाल ही में केन्द्रीय इस्पात मंत्री कपिल सिब्बल की कविताओं से उनका भावुक चेहरा सामने आया था जबकि 'ढोल' से कांग्रेस के मीडिया प्रभारी का कर्नाटक की मिट्टी से ओतप्रोत मानस पेश होता है। चार दशक से राजनीति कर रहे श्री मोइली मुख्यमंत्री से लेकर अब पार्टी केन्द्रीय दायित्व सम्भालने की डगर पर चलते रहे हैं लेकिन कलम का साथ भी उन्होंने नहीं छोड़ा। तीन नाटक, चार उपन्यास, तीन काव्य संग्रह और भाषणों का एक संग्रह इस कन्नड़ नेता के नाम के साथ दर्ज है।

## शुकदेव बाबू ज्ञान के मणिदीप थे

— डॉ० अवधेश्वर अरुण

हर व्यक्ति के होने का अर्थ होता है। प्रथम अपने लिए या अपनों के लिए। द्वितीय अन्यों के लिए या सबके लिए। शुकदेव बाबू अपने और अपनों से अधिक अन्यों के लिए थे। वे सरस्वती पुत्र थे। व्यक्ति धन, जन और बल अपने लिए अथवा अपनों के लिए अर्जित करता है मगर ज्ञान अन्यों के लिए। ज्ञान मणिदीप होता है जो व्यक्ति को तो प्रकाशित करता ही है समाज तथा देश को भी प्रकाशित करता है। शुकदेव बाबू ज्ञान के मणिदीप थे। उनके छात्र, उनके शोधार्थी और उनके ग्रन्थ ज्ञान के आदि दीप हैं जो उनके न रहने पर भी समाज को उनकी उपस्थिति का एहसास कराते रहेंगे।

शुकदेव बाबू तत्कालीन बिहार विश्वविद्यालय (अब बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय) के प्रख्यात लंगट सिंह कालेज में हिन्दी के व्याख्याता पद पर नियुक्त होकर सन् 1964 ई० में मुजफ्फरपुर आये। शुकदेव बाबू उसके पहले महाराजा कालेज, आरा में थे। वहीं से यहाँ आये थे। मझोला से किंचित ऊँचा कद, गोल मुख पर चेचक के हल्के दाग, बड़ी-बड़ी आकर्षक आँखें, हल्का सांवला रंग और सिर पर थोड़े बाल। कुरता और धोती का शुभ्र परिधान। हमारे तत्कालीन हिन्दी विभागाध्यक्ष विनय कुमार जी ने हम लोगों से परिचय कराया। हम लोगों ने गर्मजोशी से अपने नये सहयोगी का स्वागत किया। कुछ ही महीनों में उनके क्रिया-व्यापारों तथा बातचीत से अनुभव किया कि शुकदेव बाबू में कुछ ऐसा है जो विशिष्ट है। धीरे-धीरे उनके व्यक्तित्व की परतें खुलती गयीं। उनके प्रखर ज्ञान, प्रसरणशील व्यक्तित्व और व्यंग्य विनोद भरी बातों का रस हमें अनुभव होने लगा। उन दिनों इस कालेज का हिन्दी विभाग ही विश्वविद्यालय का हिन्दी विभाग था। विभाग में वरीय-कनीय मिलाकर हम लोग लगभग एक दर्जन अध्यापक थे। सबके सब अच्छे परीक्षाफल वाले, तेजस्वी तथा अध्ययन-अध्यापना के प्रति समर्पित। इन्टर से लेकर एम०ए० तक की कक्षाएँ लेनी पड़ती थीं हम लोगों को। विभाग के अधिकतर लोग विनोदप्रिय, हाजिरजवाब और खुलकर हँसने-हँसाने वाले थे। दूसरे विभागों के भी विनोदप्रिय लोग हम लोगों के ज्यादा करीब हो गये। चुटकियाँ लेने, व्यंग्य करने तथा किसी के बारे में रोचक कहानियाँ गढ़ लेने तथा लतीफों की फुलझड़ियाँ छोड़ने में हम कुछ लोग माहिर थे। लोगों के परिहास पात्र प्राय: वे अध्यापक थे जो मनहूस, अशैक्षिक गतिविधि में लिप्त या अकारण गम्भीरता का लबादा ओढ़े रहते थे। परिहास करने वाले शब्दों तथा कथाओं के रचनाकारों में शुकदेव बाबू विशिष्ट थे। वे ऐसे शब्दों की रचना करते थे जो साधारणत: ऊपर से अत्यन्त निरामिष लगते थे, लेकिन जिस व्यक्ति के सन्दर्भ में रचे जाते थे उसे यदि सही अर्थ का ज्ञान करा दिया जाय तो वह मारपीट करने पर उतारू हो जाय। जैसे उन्होंने एक शब्द चलाया था मौलिक विद्वान, आपकी बराबरी कोई क्या करेगा? तब वे सज्जन तो खुश होते थे मगर हमलोगों के लिए ठहाके दबाना मुश्किल हो जाता था। वस्तुत: शुकदेव बाबू ने मूल को जड़ का पर्याय बनाया था और जड़ का अर्थ जड़मति कर लिया था। इस तरह मौलिक विद्वान का अर्थ था जड़मति या मूर्ख। इसी तरह उनका एक प्रिय शब्द था चक्रवर्ती। यह शब्द एक विशेष अध्यापक को दी गयी उपाधि थी। वे राजनीतिबाज थे, शैक्षिकेतर गतिविधियों में लिप्त रहते थे तथा छात्रों का गलत इस्तेमाल कर विश्वविद्यालय में अराजकता फैलाने के लिए विख्यात थे। विभाग में मेरी और शुकदेव बाबू की जोड़ी शब्दों को तोड़-मरोड़ कर अर्थ का अनर्थ करने तथा श्लिष्ट शब्दों के सहारे व्यंग्य करने वाले शिक्षकों की जोड़ी मानी जाती थी। हम लोग विभाग में संवाद और सद्भाव कायम रखने के लिए इस तरह का हास-परिहासपूर्ण वातावरण बनाये रखते थे। इसका प्रभाव भी अच्छा पड़ता था। कभी-कभी हम लोग जान-बूझकर चुप्पी साध लेते। इससे सन्नाटा अनुभव होता और स्वयं हमारे व्यंग्यों का शिकार होने वाले अध्यापक भी हमें कुछ ऐसा करने के लिए उकसाते थे जिससे संवाद बना रहे। हम यह सब राग-द्वेष के कारण नहीं मनोविनोद के लिए करते थे अत: कभी फूहड़पन या अमर्यादा को प्रश्रय नहीं देते थे, वरीयता-कनीयता का भी ध्यान रखते थे।

कोई व्यक्ति तन से अमर होकर नहीं आता। वह यश की छाया में ही अमर रहता है। शुकदेव बाबू वाणी का तप करने वाले साधक थे। वे जीवन भर साहित्य और समाज के प्रति समर्पित होकर तप करने वाले साधक थे। वे यशस्वी, अमर हैं। संसार के सारे भौतिक उपादान मरणोपरांत व्यर्थ हो जाते हैं, साथ छोड़ देते हैं, लेकिन सरस्वती अपने पुत्रों का साथ नहीं छोड़ती। सरस्वती पुत्र शुकदेव बाबू भी सदैव अपनी कृतियों के माध्यम से याद किये जाते रहेंगे—'स: जीवति यस्य कीर्ति: जीवति।'

# संगोष्ठी/लोकार्पण

## श्री अरविन्द भारतीय संस्कृति के उन्नायक हैं

श्री अरविन्द सोसायटी, वाराणसी केन्द्र के तत्वावधान में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन डॉ० राधाकृष्णन सभागार, कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में किया गया। संगोष्ठी का आयोजन दो सत्रों में हुआ। प्रथम सत्र की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो० डी०पी० सिंह, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने कहा कि श्री अरविन्द जैसे लोग शरीर त्यागते हैं मरते नहीं, वे महान लोक का निर्माण अपने विचार के रूप में करते है। मुख्य अतिथि श्री अवधरामजी, कुलपति, काशी विद्यापीठ ने श्री अरविन्द को भारतीय संस्कृति का उन्नायक घोषित किया।

दूसरे सत्र में डॉ० उदयप्रताप सिंह ने कहा कि इस वैश्विककरण से बचने के लिए श्री अरविन्द के साहित्य को पढ़ना होगा। उनके विचारों को अपनाना होगा तभी हमारा कल्याण सम्भव है। प्रो० हरिकेश ने श्री अरविन्द के सांस्कृतिक पक्ष के योगदानों को उजागर किया। प्रो० ऋत्विक सान्याल जी ने श्री अरविन्द के दार्शनिक व सांस्कृतिक पक्ष पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम की संयोजिका एवं संचालिका डॉ० बृजबाला सिंह ने अतिथियों और उपस्थित श्रोताजनों का स्वागत किया।

## 'विष्णुविराट अभिनन्दन ग्रन्थ' का लोकार्पण

पश्चिमांचल के प्रसिद्ध नवगीतकार डॉ० विष्णुविराट के सम्मान में एम०एस० यूनीवर्सिटी, बड़ौदा के कलासंकाय सभागार में अभिनन्दन समारोह आयोजित हुआ, जिसमें विष्णुविराट के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की विस्तृत चर्चा की गई। प्रो० शिवकुमार मिश्र ने 'विष्णुविराट अभिनन्दन ग्रन्थ' का लोकार्पण सम्पन्न किया। उपस्थित विद्वानों में अलीगढ़ से डॉ० वेदप्रकाश अमिताभ, उज्जैन से प्रो० हरिशंकर बुधौलिया, डॉ० नरेन्द्र सिंह फौजदार, खण्डवा से डॉ० श्रीराम परिहार, अहमदाबाद से प्रो० मालती दूबे, वल्लभ विद्यानगर से प्रो० नवनीत चौहान, मथुरा से डॉ० नटवर नागर तथा प्रो० मधुसूदन चतुर्वेदी तथा गुजरात से अनेक विद्वानों ने अपने अभिमत व्यक्त करते हुए शाल-अर्पण किए। ध्यातव्य है कि विष्णुविराट ब्रज भाषा के आचार्य कवि हैं तथा इनके लगभग 75 ग्रन्थ प्रकाशित हैं। महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा के हिन्दी विभागाध्यक्ष रहे हैं तथा गुजरात हिन्दी प्रचारिणी सभा के निदेशक भी हैं, नवगीतकार के रूप में आपकी राष्ट्रीय ख्याति है।

## 'कुछ अपनी, कुछ पराई' का लोकार्पण

नई दिल्ली के राजेंद्र भवन में जाने-माने पत्रकार श्री प्रभाष जोशी ने श्री शशांक अत्रे की पुस्तक 'कुछ अपनी, कुछ पराई' का लोकार्पण किया। यह पुस्तक अत्रे के सामाजिक विषयों पर लिखे तमाम लेखों से सँजोई गई है।

## 'कृष्णद्वैपायन' का लोकार्पण

वयोवृद्ध रचनाकार साहित्य वाचस्पति डॉ० श्रीपाल सिंह 'क्षेम' की पुस्तक 'कृष्णद्वैपायन' का लोकार्पण उनके 87वें जन्मदिन पर आयोजित समारोह में उत्तर प्रदेश विधानसभाध्यक्ष श्री सुखदेव राजभर द्वारा किया गया। उन्होंने कहा कि आज साहित्य व साहित्यकारों से दिन-ब-दिन बढ़ती दूरी अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है। साहित्य से दूरी समाज में बढ़ते तनाव का कारण है। संस्कृति मंत्री सुभाष पाण्डेय ने कहा कि इस महाकाव्य पर दृष्टिपात करने पर स्पष्ट प्रतीत होता है कि इसके माध्यम से डॉ० क्षेम ने समाज की दुखती नब्ज पर हाथ रखते हुए कथनी-करनी में फर्क रखने वालों को आईना दिखाया है।

## मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा पन्द्रहवीं पावस व्याख्यानमाला का आयोजन

मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति और पण्डित रविशंकर शुक्ल हिन्दी भवन, भोपाल में एक से तीन अगस्त 2008 तक सम्पन्न हुई पन्द्रहवीं पावस व्याख्यानमाला के अन्तर्गत आयोजित हुए सात सत्रों में विद्वानों की प्रखर वैचारिक भागीदारी ने वैचारिक अनुष्ठानों के इतिहास में एक नया गौरवशाली अध्याय जोड़ा। इस पावस व्याख्यानमाला में राष्ट्रीय ओज के कवि रामधारी सिंह दिनकर और मानवता के आराधक कवि एवं नाटककार जगन्नाथप्रसाद मिलिंद पर दो स्वतंत्र विमर्श सत्र आयोजित किए गए। इस अवसर पर छः सद्य प्रकाशित पुस्तकों के अलावा पिछले साल सम्पन्न चौदहवीं पावस व्याख्यानमाला के विमर्श पर आधारित 'संवाद और हस्तक्षेप' दस्तावेज का लोकार्पण भी हुआ। भोपाल की रंग संस्था रंग समूह के कलाकारों द्वारा नाट्य निदेशक अशोक बुलानी के निर्देशन में कविवर दिनकर की ओजपूर्ण कविताओं की भाव प्रस्तुति की गयी और इसी क्रम में छिंदवाड़ा (म०प्र०) के चित्रकार श्री सुन्दरलाल विश्वकर्मा 'चंचलेश' द्वारा महाकवि जयशंकर प्रसाद की अमर काव्यकृति 'कामायनी' पर बनाये गये चित्रों की प्रदर्शनी भी लगायी गयी।

इस त्रिदिवसीय पन्द्रहवीं पावस व्याख्यानमाला का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि श्री शंभुनाथ ने कहा कि यह आयोजन अतीत की ओर जाने का आयोजन है। जो देश अपने अतीत को भुला देता है—वह अपने वर्तमान को शून्य कर देता है और भविष्य के सामने प्रश्न चिह्न लगा देता है। अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रो० रमेशचन्द्र शाह ने पावस व्याख्यानमाला को एक उज्ज्वल और सार्थक परम्परा निरूपित करते हुए कहा—"आज देश आतंकवाद के कारण एक अभूतपूर्व त्रासदी से से गुजर रहा है। ऐसा पैशाचिक ताण्डव हमने पहले नहीं देखा था। धर्म के नाम पर जो दानव लीला चल रही है, उसकी प्रतिक्रिया में हमारे साहित्यकार अपनी आवाज क्यों नहीं उठा रहे हैं ? यह एक बड़ा प्रश्न हमारे सामने खड़ा है।"

'1857 की नारियाँ और हिन्दी साहित्य' विषय पर प्रख्यात आलोचक डॉ० विजयबहादुर सिंह ने कहा—"इतिहास की पूजा करना आसान है, लेकिन उसको पुनर्जीवित करना कठिन है। आज देश में एक ऐसा वर्ग उभरकर सामने आ रहा है, जिसके लिए आजादी के कोई माने नहीं है। ऐसे वर्ग के भरोसे आजादी की रक्षा की उम्मीद करना निरर्थक है।"

'नब्बे वर्षों (1857-1947) की स्त्रियाँ और साहित्य' यह था—प्रथम विमर्श सत्र का मुख्य विषय। इस सत्र के अध्यक्ष भारतीय ज्ञानपीठ के पूर्व निदेशक एवं भारत भवन के नवनियुक्त न्यासी डॉ० प्रभाकर श्रोत्रिय ने कहा—"साहित्य में स्त्रियों के अवदान का मूल्यांकन लगातार हुआ है।" डॉ० सूर्यप्रसाद दीक्षित ने कहा—"देश की महिला लेखिकाओं के सृजन में तब समान अधिकार और स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने का स्वर था।" श्री नंदकिशोर आचार्य ने भी इस सत्र में अपने विचार रखे।

'नवजागरण काल की नारियाँ और हिन्दी साहित्य' विषय पर लेखिका डॉ० नीरजा माधव ने अपना शोधपरक व्याख्यान दिया। डॉ० राजम नटराजन पिल्लै ने राष्ट्रीय आन्दोलन की नारियाँ और हिन्दी साहित्य विषय पर काफी सारगर्भित व्याख्यान दिया। गाँधी विद्या संस्थान की निदेशक प्रो० कुसुमलता केडिया ने 'गाँधीजी और स्त्रियाँ' विषय पर चिंतन और अध्ययन से परिपूर्ण व्याख्यान दिया। इस सत्र में डॉ० करुणा उमरे ने 'नब्बे वर्षों की नारियाँ और साहित्य' विषय पर अपने विचार रखे।

द्वितीय विमर्श सत्र का केन्द्रीय विषय 'हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीयता का स्वर' था। सत्र की अध्यक्षता 'दस्तावेज' पत्रिका के सम्पादक डॉ० विश्वनाथप्रसाद तिवारी ने की। इस विषय के अन्तर्गत अतिथि विद्वान डॉ० यतीन्द्र तिवारी ने 'राष्ट्र, राष्ट्रीयता और राष्ट्रभाषा' विषय पर अपने विचार रखे। अध्यक्षीय भाषण में डॉ० विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि देश में राष्ट्रप्रेम की भावना कमजोर पड़ रही है।

पावस व्याख्यानमाला का तृतीय विमर्श सत्र राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की शती स्मृति को सर्मर्पित था। सत्र की अध्यक्षता पूर्व सांसद, कवि एवं दिनकरजी के घनिष्ठ साथी श्री बालकवि बैरागी ने की। युवा साहित्यकार श्री अनिरुद्ध उमट ने बीज वक्तव्य पढ़ा। सत्र के मुख्य वक्ता डॉ० अरुणेश नीरन ने कहा कि दिनकर हिन्दी के ऐसे विरले कवियों में शामिल हैं, जिनकी कविताएँ जन संवाद करती हैं।

व्याख्यानमाला के चतुर्थ विमर्श सत्र में मध्य प्रदेश की माटी के सपूत मानवता के आराधक कवि एवं नाटककार जगन्नाथप्रसाद मिलिंद को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। सत्र की अध्यक्षता कावेरी शोध संस्थान, उज्जैन के निदेशक डॉ० श्यामसुन्दर निगम ने की। अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉ० श्यामसुन्दर निगम ने मिलिंदजी के साहित्य के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला।

इस त्रिदिवसीय व्याख्यानमाला का समापन प्रख्यात साहित्य मनीषी राममूर्ति त्रिपाठी की अध्यक्षता में हुआ। अपने अध्यक्षीय भाषण में आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी ने कहा—''रचनाकार की पहचान उसकी रचना से उभरती है। न उभरे तो वह रचनाकार नहीं है। व्यक्तिगत सत्ता किसी महासत्ता में विसर्जित हो जाती है। इस विसर्जन के बिना रचना सम्भव नहीं हो सकती।''

### कुर्रतुल-ऐन-हैदर और प्रेमचंद की परम्परा

प्रेमचंद जयन्ती के अवसर पर जनवादी लेखक संघ अलीगढ़ के तत्त्वावधान में उर्दू की प्रसिद्ध कथाकार कुर्रतुल-ऐन-हैदर के रचना कर्म, पर एक गोष्ठी आयोजित की गयी। गोष्ठी के मुख्य वक्ता प्रो० खुर्शीद अहमद ने कुर्रतुल-ऐन-हैदर के रचना कर्म पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कुर्रतुल-ऐन-हैदर प्रेमचंद से गहरे स्तर तक प्रभावित थी।

कथाकार प्रेमकुमार ने कुर्रतुल-ऐन-हैदर से लिए गये साक्षात्कार को पढ़ा। इस साक्षात्कार में कुर्रतुल-ऐन-हैदर के जीवन से सम्बन्धित अनेक पक्षों को उद्घाटित किया। कथाकार नमिता सिंह ने कहा कि कुर्रतुल-ऐन-हैदर की तुलना वर्जीनिया वुल्फ से करना ठीक नहीं है, क्योंकि उनकी शैली बिल्कुल अलग है।

पद्मश्री काज़ी अब्दुल सत्तार ने कहा कि उन्होंने 1955 से लिखना शुरू किया। प्रो० कुँवरपाल सिंह ने कहा कि प्रेमचंद हिन्दी उर्दू के कथाकार थे जो किसानों के बीच जाने की तमन्ना अपने अन्तिम क्षणों तक रखते थे। कुर्रतुल-ऐन-हैदर ने प्रेमचंद की परम्परा को आगे बढ़ाया।

गोष्ठी का संचालन करते हुए डॉ० आशिक बालौत ने कहा कि हम हिन्दी-उर्दू के कथाकार प्रेमचंद की जयंती के अवसर पर भारतीय महान लेखिका कुर्रतुल-ऐन-हैदर को स्मरण एवं उनका मूल्यांकन कर रहे हैं। कुर्रतुल-ऐन-हैदर का साहित्य भारतीय इतिहास और संस्कृति का दस्तावेज है।

### अलंकरण समारोह व विचार गोष्ठी का आयोजन

भारतीय भाषा परिषद एवं नेशनल बुक ट्रस्ट के संयुक्त तत्त्वावधान में अलंकरण समारोह व विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भारतीय भाषा परिषद ने श्रीमती महाश्वेता देवी को उनके विशिष्ट कार्यों एवं लेखन के लिए 'रचना समग्र पुरस्कार' तथा भारत की चार भाषाओं के चार उत्कृष्ट विद्वानों-श्री कृष्ण बलदेव वैद (हिन्दी), चन्द्रकांत टोपीवाला (गुजराती), के०पी० रामानुन्नी (मलयालम) एवं एन०बिरेन (मणिपुरी) को सम्मानित किया। विचार-गोष्ठी के प्रथम सत्र में अपनी बात रखते हुए 'प्रभात खबर' के प्रधान सम्पादक श्री हरिवंश ने 'पत्रकारिता के नये आयाम' विषय पर विचार व्यक्त किये।

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के निदेशक शंभूनाथ ने 'सत्ता, साहित्य और पत्रकारिता' विषय पर बोलते हुए कहा, ''पत्रकारिता और कविता का जन्म ही असहमति से हुआ है। दोनों क्षेत्रों में प्रतिवाद अहम स्थान रखता है।'' इस सत्र की अध्यक्षता भारतीय भाषा परिषद् की अध्यक्ष प्रतिभा अग्रवाल ने की।

कार्यक्रम के दूसरे दिन आयोजित विचार-संगोष्ठी में 'सामाजिक सरोकार और सृजनशीलता' विषय पर इन्द्रनाथ चौधरी ने विचार व्यक्त किये। इसी सत्र में पुरुषोत्तम अग्रवाल ने 'साहित्य, सामाजिक अस्मिताएँ, और नागरिकता' विषय पर अपनी बात रखते हुए कहा कि लेखक व पाठक के लिए साहित्य परकाया प्रवेश के समान होता है। इसी सत्र में यू०आर० अनंतमूर्ति ने 'भारत के अंतर्विरोध एवं एकता की अंत:-सलिला' विषय पर बोलते हुए कहा कि बाजार की ताकतें पूरे विश्व में पैर पसार रही हैं, यहाँ तक कि कई वाम शासित देश भी इनकी गिरफ्त में आ रहे हैं।

इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए आलोचक शंभूनाथ ने समकालीन सन्दर्भ में बाज़ार व समाज के फ़र्क को रेखांकित करते हुए कहा कि दोनों में सबसे बड़ा फ़र्क यह है कि बाज़ार से कोई प्रश्न नहीं कर सकता, जबकि समाज से सभी प्रश्न कर सकते हैं।

### वेद भाष्यों का लोकार्पण

''जो कार्य द्वापर युग में वेदव्यासजी ने किया वही कार्य डॉ० ओमप्रकाश वर्मा ने कलयुग में किया।'' विगत दिनों सहारनपुर में 'वैदिक प्रज्ञा संस्थान' के तत्वावधान में आयोजित डॉ० ओमप्रकाश वर्मा द्वारा प्रणीत 'चारों वेदों' के भाष्य ग्रन्थों का लोकार्पण मुख्य अतिथि सर संघचालक सुदर्शनजी ने करते हुए अपनी ओजस्विनी वाणी से उपस्थित श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध किया और वेदों की सार्थकता को प्रकाशित कर पुन: वेदों की ओर लौट आने की इच्छा व्यंजित की। उन्होंने अपने वक्तव्य में वेद के प्रकाण्ड विद्वान सर जॉन की उक्ति उद्धृत की कि बड़ा आश्चर्य होता है हिन्दू लोग जिनके पास वेद हैं वे उन्हें बेकार मानते हैं और दुनिया उन पर विश्वास करती है।

'वेदभाष्य लोकार्पण समारोह' में विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्मानित डॉ० स्वातन्त्र्य कुमार, कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार ने कहा कि वेद किसी जाति विशेष, सम्प्रदाय विशेष के लिए नहीं हैं, परम वेद तो सम्पूर्ण मानव जाति के लिए हैं, ज्ञान का स्रोत हैं।

### 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल' पुस्तक का लोकार्पण

विगत दिनों दिल्ली के प्रगति मैदान में प्रकाशन विभाग की ओर से आयोजित पुस्तक मेले में 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल' पुस्तक का लोकार्पण वरिष्ठ समालोचक डॉ० मैनेजर पाण्डेय ने किया। पुस्तक लेखिका डॉ० मुक्ता ने लेखन प्रक्रिया से परिचित कराया।

### नंददुलारे वाजपेयी रचनावली का लोकार्पण

4 सितम्बर को नंददुलारे वाजपेयी रचनावली के आठ खण्डों का लोकार्पण साहित्य अकादेमी सभागार में वयोवृद्ध लेखक और संस्कृत के विद्वान् डॉ० गोविन्दचंद्र पांडे ने किया। समारोह की अध्यक्षता श्री अशोक वाजपेयी ने की। इस अवसर पर सर्वश्री गोविंदचन्द्र पांडे, कृष्णदत्त पालीवाल, मैनेजर पाण्डेय, विश्वनाथ त्रिपाठी ने अपने विचार रखे।

### भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ग्रन्थावली का लोकार्पण सम्पन्न

10 सितम्बर को दिल्ली के त्रिवेणी सभागार में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ग्रन्थावली के छह खण्डों का लोकार्पण प्रसिद्ध आलोचक प्रो० नामवर सिंह ने किया और समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ कवि केदारनाथ सिंह ने की। सर्वश्री अशोक वाजपेयी, मैनेजर पाण्डेय और शंभुनाथ ने अपने विचार रखे।

### 'ढोंगी पुजारी' का लोकार्पण

विगत दिनों हिन्दी एवं अंगिका के चर्चित नाटककार एवं लेखक श्री श्रीकांत व्यास द्वारा विरचित हिन्दी व्यंग्य नाटक 'ढोंगी पुजारी' का लोकार्पण पटना की सिन्हा लाइब्रेरी में बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् के निदेशक डॉ० रामबुझावन सिंह ने किया। समारोह की अध्यक्षता डॉ० रामशोभित प्रसाद सिंह ने की।

### आखिर कब तक

नई दिल्ली। हिन्दी भवन में आयोजित समारोह में बी०एल० गौड़ के कविता संग्रह 'आखिर कब तक' का लोकार्पण करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० रामदरश मिश्र ने कहा कि प्रस्तुत संग्रह की कविताओं में अद्‌भुत ऊर्जा है जो अन्दर तक उद्वेलित करती है। इस अवसर पर सर्वश्री से०रा० यात्री, गोविन्द व्यास, वेदप्रकाश अमिताभ, अमरनाथ अमर, कुँवर बेचैन, स्मिता मिश्र ने कवि के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला।

### नेमिचन्द्र जैन स्मृति व्याख्यान

साहित्य अकादेमी के सभागार में नटरंग प्रतिष्ठान और नेमि निधि के संयुक्त तत्त्वावधान में

नाट्य-समीक्षक नेमिचन्द्र जैन स्मृति व्याख्यान का आयोजन किया गया। 'सर्जनात्मक अनिश्चय' विषय पर व्याख्यान देते हुए फिल्मकार कुमार साहनी ने कहा कि विभिन्न कलाओं की सर्जनात्मक प्रक्रिया में कई ऐसे तत्त्व होते हैं जो अनायास पैदा होते हैं और जिनके बारे में सर्जक भी बहुत कम जान पाता है।

साहित्यकार नेमिचन्द्र जैन के व्यक्तित्व और कृतित्व पर डॉ० ज्योतिष जोशी तथा मुद्राराक्षस द्वारा लिखी गई दो पुस्तकों के साथ ही नेमिजी द्वारा इब्सन के एक प्रसिद्ध नाटक के बांग्ला अनुवाद में हिन्दी अनुवाद की पुस्तक का विमोचन किया गया। कार्यक्रम का संचालन अशोक वाजपेयी ने किया।

### हिन्दी का भविष्य और भविष्य की हिन्दी

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में 'हिन्दी का भविष्य और भविष्य की हिन्दी' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। जिसमें कुछ वक्ताओं ने हिन्दी के सुनहरे भविष्य की कल्पना की तो कुछ ने वर्तमान में हिन्दी की मौत या लुप्तप्राय होने की भविष्यवाणी भी की। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में डॉ० नामवर सिंह ने कहा कि जो लोग शुद्धतावादी हिन्दी की वकालत कर रहे हैं, वही हिन्दी भाषा के सबसे बड़े दुश्मन हैं। भाषाओं का तो अनवरत विकास होता रहता है। पत्रकार मार्क टली ने भी कहा कि हमें हिन्दी शुद्धता की बजाय सर्वग्राह्यता पर विचार करना चाहिए। कवि कुँवर नारायण ने कहा कि किसी भी भाषा का मुख्य काम संवाद संप्रेषण होता है, इसलिए हिन्दी को आजादी मिलनी चाहिए। साहित्यकार केदारनाथ सिंह ने कहा कि हिन्दी का भविष्य भी है और भविष्य की हिन्दी भी है। हिन्दी का लोकतंत्रीकरण हो रहा है। प्रभाष जोशी ने कहा कि भाषा लोगों के साथ-साथ बदलती है, हिन्दी भी बदल रही है। अभी विश्व पर अमेरिकी पूँजी का दबाव है, इसलिए अंग्रेजी का वर्चस्व है, लेकिन जब चीनी पूँजी और भारतीय पूँजी का दबदबा होगा, तब सोचिए अंग्रेजी का क्या होगा? पत्रकार बालमुकुंद सिन्हा, आनन्द प्रधान, पत्रकार राहुल देव, अशोक वाजपेयी, प्रयाग शुक्ल आदि ने अपने विचार प्रकट किए।

### नलिनी अरविन्द एण्ड टी०वी० पटेल आर्ट्स कालेज में द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

चारुतर विद्यामण्डल संचालित नलिनी अरविंद एण्ड टी०वी० पटेल आर्ट्स कालेज, वल्लभ विद्यानगर एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के संयुक्त तत्त्वावधान में द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'विश्वग्राम और तुलनात्मक साहित्य' का उद्घाटन 14 सितम्बर 2008 को प्राचार्य एस०एम० पटेल की अध्यक्षता एवं अतिथि विशेष ख्यातनाम मार्क्सवादी आलोचक प्रो० शिवकुमार मिश्र, कालेज के प्राचार्य डॉ० एन०आर० परमार, संयोजक डॉ० भरतसिंह झाला, समन्वयक डॉ० शिवप्रसाद शुक्ल, 13 विषय विशेषज्ञों एवं 93 प्रतिभागियों की उपस्थिति में हुआ। अतिथि विशेष प्रो० शिवकुमार मिश्र ने 'विश्वग्राम एवं तुलनात्मक साहित्य' की विभावना को रेखांकित करते हुए उसके विकृत रूपों पर भी प्रकाश डाला। उद्घाटन के समय 'महादेवी का रचना संसार' एवं 'समकालीन हिन्दी साहित्य : विविध परिप्रेक्ष्य' पूर्ववर्ती परिसंवादों की फलश्रुति के रूप में प्रकाशित दो किताबों का लोकार्पण तथा डॉ० जगन्नाथ पंडित के कहानी संग्रह 'हिंग्लोट' का भी लोकार्पण हुआ।

### दिनकर-साहित्य का अनुवाद विश्व-भाषाओं में हो—चेन्नई में आयोजित जन्मशती-समारोह में आह्वान

राष्ट्रकवि रामधारीसिंह दिनकर की 100वीं जयंती के अवसर पर विगत दिनों आयोजित समारोह में विशिष्ट अतिथि पद से उद्गार व्यक्त करते हुए हिन्दी-अंग्रेजी के प्रबल कवि एवं लेखक श्री गिरीश पाण्डेय (आयकर आयुक्त) ने कहा कि दिनकर विश्वस्तर के कवि हैं और उनके साहित्य का अंग्रेजी एवं अन्य भाषाओं में अनुवाद करवाना हमारा दायित्व है। पद्य एवं गद्य में समान रूप से अपने कालजयी साहित्य की सर्जना करके वे अमर हो गये हैं। जन्मशती के अवसर पर विशेष संगोष्ठी का आयोजन साहित्यानुशीलन समिति (चेन्नई) के तत्त्वावधान में राजेन्द्र बाबू भवन में रखा गया जिसमें चेन्नई के साहित्यकारों, शिक्षकों, छात्रों एवं साहित्यप्रेमियों ने भाग लेकर अपने श्रद्धापूरित विचार प्रकट किये। समारोह की अध्यक्षता करते हुए हिन्दी-तमिल के वरिष्ठ विद्वान् डॉ० एन० सुंदरम ने दिनकरजी की वैचारिक उदारता की चर्चा की और साहित्यानुशीलन समिति के साथ उनके सौहार्दपूर्ण सम्बन्धों को याद किया। स्वागत-वक्तव्य देते हुए समिति अध्यक्ष डॉ० इंदरराज बैद ने कहा कि दिनकर उन कवियों में अग्रणी हैं, जिन्होंने खड़ीबोली हिन्दी के तेज और ओज को उपस्थापित किया है। इस अवसर पर आयोजित विद्वत् गोष्ठी में अनेक प्रपत्र प्रस्तुत किये गये। विद्वान् श्री र० शौरिराजन ने कवि की कृति 'प्रणभंग एवं अन्य कविताएँ' पर, डॉ० पी०के० बालसुब्रह्मण्यन ने 'परशुराम की प्रतीक्षा' पर, डॉ० एस० सुब्रह्मण्यन विष्णुप्रिया ने 'उर्वशी' पर, डॉ० एम० लोकनाथन ने 'कुरुक्षेत्र' पर डॉ० पी०सी० कोकिला ने 'रश्मिरथी' पर एवं डॉ० इंदरराज बैद ने 'बापू' काव्य पर अपने शोधपूर्ण आलेख प्रस्तुत किये।

### डॉ० फादर कामिल बुल्के भारतीय संस्कृति के मानस पुत्र थे : डॉ० मालती दुबे

गुजरात विद्यापीठ के हिन्दी विभाग द्वारा डॉ० फादर कामिल बुल्के के शताब्दी समारोह पर एक राष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की प्रस्तावना में हिन्दी विभाग की अध्यक्ष डॉ० मालती दुबे ने कहा कि डॉ० कामिल बुल्के ने ईसाई होते हुए भी भारतीय जनता, भारतीय संस्कृति, साहित्य और हिन्दी भाषा की सेवा के साथ तुलसी की भक्ति को अपनी आध्यात्मिक साधना का एक विशेष अंग माना। डॉ० बुल्के भारतीय संस्कृति के मानस पुत्र थे, उन्होंने एक आज्ञाकारी पुत्र की भाँति जीवन-पर्यंत भारतीय संस्कृति की सेवा में जीवन समर्पित किया।

संगोष्ठी मंच से बोलते हुए डॉ० मालती दुबे ने कहा कि डॉ० कामिल बुल्के का जन्म 1 सितम्बर 1909 को पश्चिमी बेल्जियम के रम्सकपैले ग्राम में हुआ। वे विज्ञान के विद्यार्थी थे, इन्जीनियरिंग के अभ्यास क्रम के दौरान ही उन्होंने संन्यास ग्रहण करने का निर्णय ले लिया। 1935 में वे भारत आये और रांची शहर में रहकर भारतीय संस्कृति और हिन्दी भाषा का अध्ययन करने लगे। जर्मन ग्रन्थ के अध्ययन से प्राप्त संस्कार एवं हिन्दी साहित्य के विशेष अध्ययन के बीच डॉ० बुल्के का लगाव कवि तुलसी से अनन्य रूप से हुआ जो जीवनपर्यंत गहरा ही होता चला गया। डॉ० दुबे ने कहा कि 'आदर्श जीवन के व्याख्याता' नामक एक निबन्ध में डॉ० बुल्के ने लिखा है कि जर्मन ग्रन्थ के अध्ययन के दौरान रोमन भाषा में लिखे हुए इस उद्धरण ने मेरे जीवन में एक विशेष परिवर्तन ला दिया।

धन्य जनम जगतीतल तासू।
पितहि प्रमोदु चरित सुनि जासू।
चारि पदारथ करतल ताकें।
प्रिय पितु मातु प्रान सम जाके॥

इस चौपाई ने डॉ० बुल्के को जीवन पर्यंत तुलसीमय बना दिया एवं उनका रामकथा से अनन्य नाता जुड़ गया। समारोह में विद्यापीठ के कुलनायक डॉ० सुदर्शन आयंगार एवं वर्धा (महाराष्ट्र) से आये डॉ० आत्माप्रकाश श्रीवास्तव ने भी डॉ० बुल्के के प्रति अपने विचार व्यक्त किये।

### असम राज्य में हिन्दी दिवस का आयोजन

मार्घेरिटा कॉलेज के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० मृणाली कुँवर तथा सहकर्मी डॉ० पुष्पा सिंह के नेतृत्व में उत्तर पूर्वांचल के सुदुरवर्ती मार्घेरिटा कालेज में हिन्दी दिवस मनाया गया।

मार्कण्डेय पुरस्कार से सम्मानित डी०लिट्० उपाधि से अलंकृत डिगबोई महिला महाविद्यालय के विभागाध्यक्ष डॉ० हरेराम पाठक जो सभा के मुख्य अतिथि थे, अपने भाषण में बताया कि हिन्दी के पहले कवि सरहपा असम से ही थे। असम में हिन्दी का प्रचार-प्रसार महात्मा गाँधी के 1926 में आने से पूर्व ही हो चुका था। कॉलेज के अध्यक्ष डॉ० बुद्धिन गगै ने पहली बार हिन्दी दिवस से प्रभावित हो अपना पूरा भाषण हिन्दी में देने की चेष्टा की।

# पाठकों के पत्र

'भारतीय वाङ्मय' पत्रिका के अंकों की नियमित प्राप्ति हेतु आभारी हैं। विश्वविद्यालय प्रकाशन द्वारा हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की श्रेष्ठ पुस्तकों का प्रकाशन प्रशंसनीय कार्य है। स्व० पुरुषोत्तमदास मोदीजी के निर्वाण के बाद आपके द्वारा पत्रिका-सम्पादन कुशलता से किया जा रहा है। स्व० मोदीजी हिन्दी की उपेक्षा पर अपने जीवनकाल में प्राय: अपनी पीड़ा व्यक्त करते रहते थे।

अभी कछ दिन पुर्व मुम्बई के एक कार्यक्रम में जया बच्चन ने कहा कि हम यू०पी० वाले हैं, हम हिन्दी में बोलेंगे। जया बच्चन ने कौन सी अनुचित बात कही थी जो उनके परिवार को माफी माँगनी पड़ी। श्री हरिवंशराय बच्चनजी हिन्दी के प्रतिष्ठित कवि थे। उधर अंग्रेजी की तथाकथित प्रगतिशील लेखिका अरुन्धती राय सार्वजनिक मंच से कश्मीर की आजादी की बात करती हैं। कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है, भारत माता का मुकुट है। राष्ट्रद्रोह की बात करने वाली अरुन्धती राय निर्भय घूमती है और राष्ट्रभाषा हिन्दी की पक्षधर जया बच्चन तुरन्त माफी माँग लेतीं हैं। हम हिन्दी भाषी आखिर इतने कायर क्यों हैं? — **जे०सी० पन्त,** उत्तरांचल

'भारतीय वाङ्मय' का सितम्बर अंक मिला स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी-विशेष स्मृति अंक भी। सब संग्रहणीय है। सितम्बर 08 अंक का सम्पादकीय अत्यन्त मजा हुआ लगा। 'हिमाद्रि तुंग-शृंग' शीर्षक भी सार्थक है। इसका चतुर्थ चरण प्रसादजी जैसे युग-द्रष्टा ने अपने सपनों से सजाया था—'स्वयंप्रभा समुज्ज्वला वह स्वतन्त्रता' तब पुकार रही थी। जब मिली तो प्रसादजी नहीं रहे। आज होते तो यह सब देखकर दर्द होता। आपने उसकी प्रतिध्वनि इकबाल की शायरी में दे दी। पर, वे भी तो इस देश को छोड़ पाक में चले गये। — **डॉ० तपेश्वर नाथ,** भागलपुर

आपने 'भारतीय वाङ्मय' को यौवन प्रदान कर दिया है। आप और अनुरागजी ने संयुक्त प्रयास से जिस प्रकार पिता की कीर्तिलता को प्रतिमास पुष्टतर बनाना शुरू किया है, वह साधुवाद का पात्र है। — **राधामोहन उपाध्याय,** हावड़ा

आपने जिस कुशलता के साथ मोदीजी की इच्छा आकांक्षा के अनुरूप 'भारतीय वाङ्मय' को सम्भाला ही नहीं उसे निरन्तर और उपयोगी और सुन्दर तथा ज्ञानवर्धक बनाने में पूरी रुचि के साथ लगे हैं और उसे नियमित वैसे ही जैसे पूज्य मोदीजी चाहने वालों को प्रस्तुत करते थे प्रस्तुत कर रहे हैं इसके लिए आप दोनों को धन्यवाद तथा भूरि-भूरि अभिनन्दन है।

— **डॉ० रामअवतार पाण्डेय,** वाराणसी

हर बार की तरह महत्त्वपूर्ण सूचनाओं, विचारपरक टिप्पणियों और सारगर्भित पुस्तक समीक्षाओं के साथ 'भारतीय वाङ्मय' का सितम्बर अंक प्राप्त हुआ। इस महीने में 'हिन्दी-दिवस' और हिन्दी पखवारे की धूम रहती है। अंग्रेजी का वर्चस्व टूटे न टूटे लेकिन हमारे लिए खुशी और गर्व की बात होगी यदि हिन्दी भी विश्वभाषा बन जाये तो। इसकी प्रक्रिया और प्रयासों पर शुभदा वांजपे का लेख 'हिन्दी विश्वभाषा की ओर' आशावादी और आश्वस्तकारी है। — **केशव शरण,** वाराणसी

लगभग 20 पृष्ठों की यह पत्रिका स्वयं में भारतीय-वाङ्मय की विभिन्न गतिविधियों का जो संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करती है, वह एक नन्हीं सी गागर में व्यापकतम ज्ञान का सागर भर देती है। 'अथ शिक्षा' एक सुसंगत विषय है जिसमें आज के इस दौर में शिक्षकों का अभाव, इस ढाँचे के बीच शिक्षा का प्राय: अभाव, होनहार प्रतिभाओं का सीमित साधनों के कारण विकास के अवसरों से वंचित रह जाना सामान्य-सी बात है। इस ज्वलंत प्रश्न पर गम्भीर चिंतन और समाधान निकाले जाने की आज बहुत आवश्यकता है।

'पत्रकारिता अमीरों की सलाहकार और गरीबों की मददगार होनी चाहिए।' श्री गणेशशंकर विद्यार्थीजी की यह अविस्मरणीय उक्ति पूरी तरह अनुकूल है, लेकिन समस्या यह है कि 'आज के इस युग में अमीर और गरीब की परिभाषा को कौन निर्धारित करता है और जो प्राधिकारी इस परिभाषा को निर्धारित करता है, क्या वह परिभाषा आज के इस युग में सबको सर्वमान्य है?'

'समस्या और समाधान' में सुव्यवस्थित देवनागरी लिपि के अव्यवस्थित की-बोर्ड 'श्री जगदीश्वर जोहरी' जी का लेख बहुत अच्छा लगा। इसके अतिरिक्त, श्री गगनेन्द्र कुमार केडिया का लेख—'राष्ट्रभाषा हिन्दी को अंग्रेजी विधा में न लिखें—शिव को शिवा स्त्रीलिंग कर दिया गया है, हिन्दी भाषा के साथ खिलवाड़ किए जाने का प्रयास किया गया है।'

पत्रिका अत्यधिक ज्ञानवर्धक, उपयोगी सिद्ध हुई है। — **गुलशन लाल चोपड़ा,** नई दिल्ली

'भारतीय वाङ्मय' का अगस्त 08 अंक प्राप्त हुआ। समय के पुकार पर दस्तक देती विविध साहित्यिक सामग्रियाँ अत्यधिक प्रभावशाली लगीं। ''राष्ट्रभाषा हिन्दी को अंग्रेजी विधा में न लिखें'' आलेख चेतावनीपरक और मार्गदर्शक तो है ही, साहित्यिक गतिविधियों पर आधारित समाचार, महत्त्वपूर्ण पुस्तकों की सूची, स्मृति-शेष आदि भी ज्ञानवर्द्धक हैं।

विशुद्ध हिन्दी को समर्पित इतनी उत्कृष्ट पत्रिका के सफल सम्पादन एवं नियमित प्रकाशन हेतु साधुवाद। — **नरेश जनप्रिय,** बांका, बिहार

आपके कुशल सम्पादन में प्रकाशित 'भारतीय वाङ्मय' के अंक निरन्तर प्राप्त होते रहे हैं। कम पृष्ठों, चिर-परिचित कलेवर, तीखे तेवर और अधिकाधिक सूचनाओं से भरपूर 'भारतीय वाङ्मय' अपनी महत्ता-उपादेयता बनाये हुए है।

— **डॉ० ए०के० पाण्डेय,** अरुणांचल प्रदेश

परम श्रद्धेय पुरुषोत्तमदासजी के मानदण्डों के अनुकूल ही 'भारतीय वाङ्मय' का सतत प्रकाशन सुखद है। — **मोतीलाल जैन 'विजय',** कटनी

'भारतीय वाङ्मय' के अंक मिलते रहे हैं। आपने अपने पूज्य पिताश्री की परम्परा को अक्षुण्ण रखा है। एतदर्थ साधुवाद स्वीकारें।

— **डॉ० शशि तिवारी,** आगरा

'भारतीय वाङ्मय' मिलता है। पढ़ता रहता हूँ। बहुत अच्छे ढंग से आप निकाल रहे हैं। लगता ही नहीं कि भाई साहब (मोदी जी) स्वयं नहीं निकाल रहे हों। — **डॉ० कौशल राय**

लोकप्रिय 'भारतीय वाङ्मय' का सितम्बर 2008 अंक बहुत अच्छा लगा। इस अंक में प्रेमचंद की 'कॉलेज की पढ़ाई', 'हिन्दी : विश्वभाषा की ओर', 'ओड़िशा के संत कवियों की सुदीर्घ परम्परा' और 'उच्च शिक्षा की समस्याएँ' पठनीय हैं। इससे हमें साहित्यिक और सांस्कृतिक समाचारों की जानकारी मिलती है। यह एकमात्र ऐसी पत्रिका है।

— **प्रो० अश्विनी केशरवानी,** चम्पा, छत्तीसगढ़

पत्रिका के अंक नियमित प्राप्त होते रहते हैं, धन्यवाद। अभी हाल में सितम्बर 08 का अंक प्राप्त हुआ है, जिसमें हिन्दी से सम्बन्धित लेख व शिक्षा से जुड़ी सामग्री पढ़कर अच्छा लगा। छोटे-छोटे प्रोत्साहित करने वाले समाचार उन शांत द्वीपों जैसे लगे, जिस पर मानवीय संवेदनाओं की सम्भावनाएँ बिखरी हुई हैं। बिरलाजी का स्मरण पावन लगा। नई कृतियों का स्वागत सामयिक उल्लेख है। पत्रिका इसी प्रकार आगे बढ़ती रहे, यही कामना है। —**शुभदा पाण्डेय,** असम

स्व० श्री पुरुषोत्तमदास मोदी के निधन का समाचार समय पर नहीं प्राप्त कर सका था। अभी-अभी हाल में ही दिल्ली से पता चला है। अखण्ड महायोगी अनन्तश्री देवराहा बाबा व बाबा विश्वनाथजी से प्रार्थना है कि मृत आत्मा को शांति प्रदान करें तथा हम सबको इस दु:खद अनुभूति को सहन करने की अपार शक्ति प्रदान करें।

स्व० श्री पुरुषोत्तमदास मोदी जी के निधन से हिन्दी जगत् को अपार क्षति हुई है। उनके सहयोग तथा उनके प्रकाशन के द्वारा हिन्दी का रचना एवं आलोचना संसार काफी विकसित होता रहा है। 'भारतीय वाङ्मय' के द्वारा हिन्दी जगत अद्यतन साहित्यिक गतिविधियों से अवगत होता रहा है। इस परिप्रेक्ष्य में सदैव श्री पुरुषोत्तमदास मोदी याद किये जायेगे। 'अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर प्रसाद' नामक ग्रन्थ के द्वारा स्व० श्री पुरुषोत्तमदास मोदी जी हिन्दी जगत् में सदैव स्मरणीय रहेंगे। — **अजब सिंह,** अलीगढ़

# स्मृति-शेष

## रूसी लेखक सोल्झेनित्सिन नहीं रहे

साहित्य के नोबेल पुरस्कार विजेता (1970) रूसी साहित्यकार **श्री अलेक्जेंडर सोल्झेनित्सिन** का दिल का दौरा पड़ने से 89 वर्ष की आयु में 5 अगस्त को निधन हो गया। सोल्झेनित्सिन को सोवियत मजदूर शिविरों की स्थिति का चित्रण करने पर देश से निकाल दिया गया था। उनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध कृति 'गुलाग आर्चिपेलैगो' थी, जो सन् 1973 में पश्चिमी देशों में प्रकाशित हुई थी। इसमें स्टालिनकालीन 'बन्दी यातना शिविरों' का चित्रण किया गया है। वर्ष 2007 में उन्हें सर्वोच्च रूसी नागरिक सम्मान 'द रशियन स्टेट प्राइज' से सम्मानित किया गया था। उनकी अनेक रचनाओं में से दि फर्स्ट सर्किल, कैंसर वार्ड को भी विश्व भर में सराहना मिली।

## श्रीमती इंदुमती कौशिक का निधन

'अस्वीकार' जैसी कृतियों की सशक्त रचनाकार दिल्ली की सुप्रसिद्ध कवयित्री एवं गजलकार **श्रीमती इंदुमती कौशिक** का लम्बी बीमारी के बाद 20 जुलाई को निधन हो गया।

## कवि महमूद दरवेश का निधन

फिलिस्तीन के कवि **महमूद दरवेश** का निधन सिर्फ फिलिस्तीन ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में स्वतंत्रता और मानवता के लिए संघर्षरत लोगों की एक अपूरणीय क्षति है। फिलिस्तीन में राष्ट्र कवि के रूप में सराहे जाने वाले 67 वर्षीय महमूद दरवेश ने अपनी ओजपूर्ण कविताओं के जरिए फिलिस्तीन मुक्ति संघर्ष की गौरव गाथा, फिलिस्तीनियों की पीड़ा और उनकी भावनाओं को जिस मर्मस्पर्शी तरीके से व्यक्त किया वह एक मिसाल है। दरवेश की ज्यादातर कविताओं का अन्य भाषाओं में भी अनुवाद हो चुका है। दरवेश उन अरब लोगों में से थे, जिन्हें 1948 में इस्राइल के गठन के साथ ही विस्थापन का दंश झेलना पड़ा। वे कुछ वर्षों तक फिलिस्तीन मुक्ति संगठन के सदस्य भी रहे।

## 'इंफाइनाइट जेस्ट' के लेखक का अवसान

'इंफाइनाइट जेस्ट' किताब को लिखने वाले अमेरिका के प्रसिद्ध लेखक **डेविड फॉस्टर वालेस** का निधन हो गया। 46 वर्षीय वालेस, क्लेयरमांट के पोमोना कॉलेज में अंग्रेजी के प्रोफेसर भी थे। उनके दूसरे प्रसिद्ध उपन्यासों में 'द ब्रूम ऑफ द सिस्टम' शामिल है। उनकी संक्षिप्त कहानियों की किताब 'गर्ल विद क्यूरियस हेअर' ने लोगों की काफी प्रशंसा पायी। इसके आठ साल बाद उन्होंने 'इंफाइनाइट जेस्ट' लिखी। इस किताब ने साहित्य के क्षेत्र में तहलका मचा दिया। इसमें उन्होंने आनन्द और मनोरंजन किस तरह मनुष्य के आपसी सम्बन्धों में प्रभाव डालते हैं, का जिक्र किया है।

## अनन्य थीं प्रभा खेतान

महज 66 वर्ष क्या जाने की उम्र है? 19 सितम्बर को सुबह सीने में दर्द की शिकायत होने पर उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया। उसी दिन आपात परिस्थितियों में उनकी बाईपास सर्जरी हुई, लेकिन उस सर्जरी के बाद उनकी स्वाभाविक हृदयगति नहीं लौट पाई और आधी रात वे मृत घोषित कर दी गईं।

वे सशरीर हमारे बीच भले न हों, अपने सृजन के कारण हमेशा याद की जायेंगी। उद्यमी होने के कारण उन्होंने दुनिया के अनेक देशों की यात्राएँ की थीं। कदाचित उन यात्राओं ने ही उनकी दृष्टि को बहुत विस्तार दिया। प्रभा के जीवन से यह सीख ली जा सकती है कि अपने जीवन का निर्माण स्वयं अपनी तरह कैसे किया जा सकता है। प्रभा जब बच्ची थीं, तभी घर के भीतर (और बाहर भी) स्त्री की यंत्रणा देखीं थीं। इसीलिए इस यंत्रणा के खिलाफ उन्होंने आजीवन रचनात्मक संघर्ष किया। उनकी आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' में उनकी जिस विद्रोही और स्वतंत्रचेता व्यक्तित्व का परिचय मिलता है, वह अनन्य है।

> *उद्योग और साहित्य का मेल थोड़ा अटपटा लग सकता है लेकिन **प्रभा खेतान** (1 नवम्बर 1942–20 सितम्बर 2008) ने इस संतुलन को बखूबी साधे रखा था। कोलकाता के एक सम्पन्न मारवाड़ी परिवार में जन्म लेने के बावजूद प्रभा ने अपने जीवन का निर्माण स्वयं किया और स्वयं अपने आर्थिक स्रोतों की खोज की।*

प्रभा ने कोलकाता के प्रेसीडेंसी कालेज से दर्शनशास्त्र में स्नातकोत्तर डिग्री हासिल करने के बाद मशहूर फ्रांसीसी दार्शनिक ज्यां पॉल सार्त्र के अस्तित्ववाद पर पी-एच०डी० की। साहित्य जगत में उन्होंने कवि के रूप में प्रवेश किया था। उनकी पहली कविता 1954 में सुप्रभात नामक पत्रिका में तब छपी थी, जब वे सातवीं कक्षा की छात्रा थीं और तब उनकी उम्र महज 12 साल थी। पढ़ाई और कविताई साथ-साथ चलती रही।

प्रभा का प्रथम काव्य संग्रह 'अपरिचित उजाले' 1981 में आया था। उसके बाद 1982 में दूसरा संग्रह 'सीढ़ियाँ चढ़ती हुई मैं' आया। 'परवर्ती काल में एक और आकाश की खोज में' (1985), 'कृष्णधर्मा मैं' (1986), 'हुस्नबानो और अन्य कविताएँ' (1987) और 'अहिल्या' (1988) संग्रह आए और हिन्दी जगत में समादृत हुए। कविता को साधने के उपरान्त प्रभा ने गद्य का साधिकार स्पर्श आरम्भ किया। उनका पहला उपन्यास 'आओ पेपे घर चलें' 1990 में आया। उसके बाद उन्होंने एक से बढ़ कर एक उपन्यास लिखे—'तालाबंदी' (1991), 'अग्निसंभवा' (1992), 'एड्स' (1993), 'छिन्न मस्ता' (1993), 'अपने-अपने चेहरे' (1994), 'पीली आँधी' (1996), और 'स्त्री पक्ष' (1999)। इन औपन्यासिक कृतियों में प्रभा एक समर्थ, परिपक्व और उत्कृष्ट कथा शिल्पी के रूप में सामने आईं। उनके उपन्यासों की स्त्री पात्र अपनी तरह से अपने जीवन का निर्माण करतीं और अपनी पहचान के लिए जूझतीं दृष्टिगोचर होती हैं।

उनके कई उपन्यास बांग्ला में भी अनूदित होकर छपे। 'भाषा बंधन' में उनका उपन्यास 'तालाबंदी' धारावाहिक छपा था। इस उपन्यास में बंगाल में एक के बाद एक कल-कारखानों में तालाबंदी के यथार्थ पर रोशनी डाली गई हैं। 'पीली आँधी' उपन्यास में माधव बाबू और पद्मावती जैसे चरित्रों को यदि अमरत्व मिला, तो वह प्रभा के कथा सृजन के सामर्थ्य का एक दृष्टांत है। प्रभा ने सिर्फ पद्य और गद्य को ही नहीं साधा, उन्होंने अपने को एक विशिष्ट अनुवादक भी सिद्ध किया। 'सिमोन द बोउवार' की विश्व प्रसिद्ध पुस्तक 'द सेकेंड सेक्स' का हिन्दी अनुवाद उन्होंने 'स्त्री उपेक्षिता' शीर्षक से किया था। सार्त्र पर डॉक्टरेट करने के अलावा उन्होंने सार्त्र की जीवनी—'शब्दों का मसीहा-सार्त्र' लिखा। 'अलवेयर कामू : वह पहला आदमी' भी लिखा।

स्त्री विषयक उनके निबन्धों के तीन संग्रह 'उपनिवेशवाद और स्त्री', 'मुक्ति-कामना की दस वार्ताएँ', 'बाजार के बीच : बाजार के खिलाफ', भूमण्डलीकरण और स्त्री के प्रश्न हिन्दी जगत में स्त्री-विमर्श को नई ताप देने वाले सिद्ध हुए। प्रभा का वह आकलन सही है कि स्त्री के जीवन पर भूमण्डलीकरण का प्रभाव कई कोणों से पड़ रहा है। राष्ट्र बनाम भूमण्डलीकरण अथवा बाजार बनाम समाज जैसे सरलीकरण पर सवार होकर स्त्री की स्वाधीनता के पैरोकार इन प्रभावों का आकलन नहीं कर सकते। आज स्त्री विमर्श को केन्द्र में ले आने के पीछे जिन चुनिंदा लेखकों व कार्यकर्ताओं का योगदान है—उनमें प्रभा अनन्य हैं। स्त्री विषयक किताबों ने लेखिका को स्त्रीवादी चिंतक के रूप में प्रतिष्ठित किया। स्त्री विमर्श में सिर्फ लेखक होने के नाते ही वे शरीक नहीं होती रहीं, बल्कि स्त्री चेतना वाले कार्यों में सक्रिय रूप से हिस्सा भी लेती रहीं।

कोलकाता के 139 वर्ष पुराने कोलकाता चैम्बर ऑफ कॉमर्स की वे पहली महिला अध्यक्ष रहीं। कवयित्री, उपन्यासकार और नारीवादी-अस्तित्ववादी चिंतक होने के साथ-साथ प्रभा खेतान की एक बड़ी खूबी यह थी कि वे बड़ी सामाजिक कार्यकर्ता भी थीं। उन्होंने अनेक लेखकों-कलाकारों और पत्र-पत्रिकाओं की समय-समय पर आर्थिक मदद की। उनकी संस्था 'प्रभा खेतान फाउण्डेशन' ने भी संस्कृति कर्मियों और सांस्कृतिक गतिविधियों की बहुविध मदद की। **—महाश्वेती देवी**

## प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

**वर्तमान साहित्य** (सितम्बर 08) : सम्पादक-कुँवरपाल सिंह/नमिता सिंह, 28 एमआईजी, अवन्तिका-1, रामघाट रोड, अलीगढ़-202001

**समकालीन सोच 44** (जून-दिसम्बर, 2008) : सम्पादक-पी०एन० सिंह, गौतम बुद्ध कालोनी, मालगोदाम रोड, गाजीपुर-233001

**मंगल प्रभात** (सितम्बर 2008) : सम्पादक-मंडल द्वारा सम्पादित, गाँधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा, 1, जवाहरलाल नेहरू मार्ग, सन्निधि, राजघाट, नई दिल्ली-110002

**शबरी शिक्षा समाचार** (सितम्बर 08) : सम्पादक-एम० वेंकटेश्वरन, आर०ओ० 37, फर्स्ट अग्रहारम, सलेम-636001

**समग्र दृष्टि** (सितम्बर 08) : सम्पादक-केशव प्रथम वीर, मास्टर मीडिया पब्लिकेशन्स, 521, स्टर्लिंग सेण्टर, पाँचवीं मंजिल, होटल अरोरा टावर्स के सामने, एम०जी० रोड कैम्प, पुणे-1

**कृषि वार्ता** (अगस्त 08) : सम्पादक-राम शर्मा, राश प्रिण्ट एण्ड मीडिया, ओम सांई कॉम्प्लेक्स, फूल चौक, रायपुर - 492001 (छत्तीसगढ़)

**समकालीन साहित्य समाचार** (सितम्बर 08) : सम्पादक-सत्यव्रत, किताबघर प्रकाशन, पो०बॉ० 7240, नई दिल्ली-2

**सूर सौरभ** (जुलाई/अगस्त/सितम्बर 08) : सम्पादक-डॉ० एन० सुंदरम्, सूर स्मारक मण्डल, नं० 8, 13वीं गली, एरिक्करै सालै, अयप्पा नगर, मडिपाक्कम, चेन्नै-600 091

**संकल्प** (अप्रैल-जून 08) : प्रधान सम्पादक-प्रो० टी० मोहन सिंह, प्लाट नं० 10, रोड नं० 6, समतापुरी कालोनी, न्यू नागोल के पास, हैदराबाद-500 035

**हिन्दी प्रचार वाणी** (सितम्बर 08) : प्रधान सम्पादिका-बी०एस० शांताबाई, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, 178, चौथा मेन रोड, चामराजपेट, बैंगलोर-560 018

**विवरण पत्रिका** (सितम्बर 08) : सम्पादक-धोण्डीराव जाधव, हिन्दी प्रचार सभा, नामपल्ली-1, हैदराबाद

**राष्ट्रभाषा** (अगस्त 08) : प्रधान सम्पादक-प्रो० अनंतराम त्रिपाठी, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा-442 003

**मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद पत्रिका** (अगस्त 08) : सम्पादक-डॉ० बी० रामसंजीवय्या, मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद, 53, बेस्ट ऑफ कार्ड रोड, राजाजी नगर, बैंगलोर-560 010

**वार्तावाहक** (अगस्त 08) : सम्पादक-डॉ० व्रजसुंदर पाढ़ी, प्र० सचिव, हिन्दी शिक्षा समिति, ओड़िशा, शंकरपुर, अरुणोदय मार्केट, कटक-753 012

**लोकयज्ञ** (त्रैमासिक जुलाई-अगस्त-सितम्बर 2008) : सम्पादक-प्रो० सोनवणे राजेन्द्र 'अक्षत', सिन्धु पुष्प, प्राध्यापक कालोनी, आदर्शनगर, पांगरी रोड, बीड़-431 122

**साहित्य अमृत** (सितम्बर 08) : सम्पादक-त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी, 4/19, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110 002

**केरल साहित्य अकादमी शोध पत्रिका** (अप्रैल 08) : सम्पादक-डॉ० एन० चन्द्रशेखरन् नायर, श्रीनिकेतन, लक्ष्मीनगर, पहम, वालसपोस्ट, तिरुवनन्तपुरम्-695 004

### कौन क्या है ?

एक बार चर्चा चलने पर प्रेमचंद ने कहा था—''उपन्यासकार किशोरीलाल गोस्वामी उपन्यास साहित्य के पर्वत हैं।'' इस पर चुटकी लेते हुए हास्य रस के अद्वितीय लेखक बेढब बनारसी ने 'आज' के नियमित कालम 'खुदा की राह में' लिखा—उपन्यास सम्राट् ने भौगोलिक उपमा दी है। इसी वज़न पर कहा जा सकता है—''हरिऔधजी काव्य के जंगल हैं, राय कृष्णदास कला के टापू हैं और सुमित्रानंदन पंत छायावाद के जल डमरू मध्य हैं।''

—**डॉ०भानुशंकर मेहता,** बेढब के सौ वर्ष
*'साहित्यकारों के हास्य-व्यंग्य'* पुस्तक से


# भारतीय वाङ्मय

**मासिक**

**वर्ष : 9** **अक्टूबर 2008** **अंक : 10**

*संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक*
**स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी**

*संपादक :* **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 50.00

**अनुरागकुमार मोदी**
*द्वारा*
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
*के लिए प्रकाशित*

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

**डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003**
RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-01/2001


सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)


☎ : Offi. : (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082
E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**

## विश्वविद्यालय प्रकाशन

**प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता**

***( विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह )***

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

**VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN**

*Premier Publisher & Bookseller*

**(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)**

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)